स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

मॉयल
MOIL

मॉयल भारती

अंक : 4 (जुलाई–दिसंबर, 2020)

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2020

संपादक मण्डल

मुकुंद पी. चौधरी
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

उषा सिंह
निदेशक,
मानव संसाधन

डी. वी. राजू
कार्यपालक निदेशक
कार्मिक

एन.डी. पाण्डेय
कंपनी सचिव

पूजा वर्मा
राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

सुधी पाठकगण!

सप्रेम नमस्कार, कोरोना की विषम परिस्थितियों में भी सक्रियता के साथ राजभाषा कार्यान्वयन को सफल बनाने का लक्ष्य लिए हुए संपादक मंडल मॉयल भारती का यह चौथा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत आनंद का अनुभव कर रहा है। इसके लिए प्रेरणा और ऊर्जा हमारे मुखिया अर्थात आदरणीय अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक महोदय के प्रतिबद्धतापूर्ण उद्‌बोधन से प्राप्त होता है। उनका आवाहन मॉयलकर्मियों की कर्मठता में दिखाई देता है। संपादक मंडल का राजभाषा कार्यान्वयन और हिंदी सेवा के प्रति समर्पण सराहनीय है।

मॉयल भारती का यह चौथा अंक पुनः नवीनतम रचनात्मक सामग्री के साथ प्रस्तुत है। भाषा संबंधी सामग्री के अतिरिक्त महत्वपूर्ण तकनीकी आलेखों का भी समावेश किया गया है। मॉयल परिवार के साहित्यिक प्रतिभाओं की रचनाओं से भी यह अंक सज गया है। विभिन्न आयोजनों, समारोहों एवं मॉयल की सामाजिक गतिविधियों को भी स्थान दिया गया है। कोरोना काल को देखते हुए मॉयल प्रबंधन ने मॉयल परिवार से जुड़े हर पक्ष का ख्याल रखा है जो इस अंक में विशेष रूप से अंकित है।

मॉयल भारती का हर अंक पहले से अधिक निखर रहा है। इसके लिए हमारे वरिष्ठ नेतृत्व सहित विद्वान समीक्षकों एवं पाठकों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। इस अंक पर भी आपकी अनुभवी दृष्टि हमारा मार्गदर्शन करेगी, इन्हीं अपेक्षाओं के साथ आपको नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

(पूजा वर्मा)
संपादक – मॉयल भारती

अनुक्रमणिका

1.	संपादक मंडल/संपादकीय	1
2.	संदेश	3-10
3.	राजभाषा नियम एवं महत्व	12
4.	कार्यालय आदेश	13
5.	शब्दकोश : अंग्रेजी से हिन्दी	14
6.	हिंदी पखवाड़ा	16
7.	राष्ट्रीय एकता सप्ताह	17
8.	कविता : रिश्ते/दोषी कौन	18
9.	रामराज्य	19
10.	यांत्रिकी अनुवाद बनाम इंसानी अनुवाद	20-21
11.	मॉयल लिमिटेड : मुख्यालय नागपुर में 32 नए आवास का निर्माण	22
12.	परख क्वालिटी सर्कल	23
13.	बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन	24-26
14.	खुश रहने का राज	27
15.	ग़ज़ल	28-29
16.	कविता	30
17.	कविता : जिंदगी का सफर	31
18.	कविता : ज़मीनी होना	32
19.	दिसंबर! तुम्हारा स्वागत है	33
20.	राजा और ज्योतिषी	34
21.	शिक्षा में सोशल मीडिया	35
22.	कौमी एकता सप्ताह	36
23.	मॉयलः प्रशिक्षण एवं भविष्य के सुनहरे अवसर	37
24.	मद संख्या-11: कार्यालयी वेबसाइट	38-40
25.	मॉयल भारती का यात्रा	41
26.	गर्व की बात	42
27.	सोच	43

मार्गदर्शन सही हो तो दिये का प्रकाश भी सूरज का काम करता है।

मुकुंद पी. चौधरी
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड, नागपूर-440013
दूरभाष : 0712-2592070, 71 फैक्स : 0712-2592073
ई-मेल : cmd@moil.nic.in, वेबसाईट : www.moil.nic.in
CIN : L99999MH1962GO1012398

संदेश

सर्वप्रथम मैं आप सभी को नववर्ष 2021 की हार्दिक शुभकमनाएं देता हूँ। हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की सहोदरी होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी के महत्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होने कहा था, "भारतीय भाषाएं नदियाँ हैं और हिंदी महानदी"। इन शब्दों को ध्यान में रखते हुए सभी भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को प्रेमपूर्वक अपनाते हुए हमें राजभाषा हिंदी को समृद्ध बनाना होगा।

राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए नराकास, नागपुर द्वारा निरंतर मॉयल को पुरस्कृत किया जा रहा है। यह इस बात का प्रमाण है कि मॉयल में हिन्दी के कार्य में दिन–प्रतिदिन बढोत्तरी हो रही है। इस प्रयास के लिए मैं राजभाषा विभाग की प्रशंसा करता हूँ मॉयल और 'मॉयल भारती' के निरंतर विकास की कामना करता हूँ।

मुकुन्द पी. चौधरी

दिपांकर सोम
निदेशक (उत्पादन एवं योजना)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड, नागपूर-440013
दूरभाष : 0712-2592070, 71 फैक्स : 0712-2592073
ई-मेल : cmd@moil.nic.in, वेबसाईट : www.moil.nic.in
CIN : L99999MH1962GO1012398

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि मॉयल लिमिटेड राजभाषा विभाग की पत्रिका मॉयल भारती के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा।

हिन्दी हमारी राष्ट्रीय पहचान होने के साथ–साथ हमारी सांस्कृतिक समृद्धि और विरासत का प्रतीक भी है। संविधान में हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया है इसलिए हम सभी का संवैधानिक कर्तव्य है कि हम अपना सरकारी कामकाज हिन्दी में ही करें। हिन्दी में कामकाज बढ़ाने के लिए अधिकारी और कर्मचारी मौलिक रूप से हिन्दी में कामकाज करने का प्रयास करें तभी राजभाषा की वास्तविक प्रगति संभव है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आपको रुचिकर व आकर्षक लगेगा। मैं सभी रचनाकारों और इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएं देता हूँ।

दिपांकर सोम

(दिपांकर सोम)

राकेश तुमाने
निदेशक (वित्त)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड, नागपूर-440013
दूरभाष : 0712-2592070, 71 फैक्स : 0712-2592073
ई-मेल : cmd@moil.nic.in, वेबसाईट : www.moil.nic.in
CIN : L99999MH1962GO1012398

संदेश

आप सभी को नववर्ष 2021 की हार्दिक शुभकमनाएं, यह हर्ष का विषय है कि 'मॉयल भारती' के नये संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी देश की राजभाषा है और हम सभी का संवैधानिक दायित्व है कि हम अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें। हिन्दी भाषा की बढ़ती लोकप्रियता इस बात का सशक्त प्रमाण है कि हिन्दी भाषा खास और आम सभी के हृदय को स्पर्श करती हैं।

मॉयल भारती राजभाषा के प्रचार प्रसार के दायित्व को बखूबी निभा रही है। मुझे आशा है कि मॉयल भारती के प्रकाशन से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति सकारात्मक प्रवृत्ति जागृत होगी तथा उन्हे विविध विषयों पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिलेगा।

मॉयल भारती के सफल प्रकाशन के लिए सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(राकेश तुमाने)

उषा सिंह
निदेशक,
मानव संसाधन

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड, नागपूर-440013
दूरभाष : 0712-2592070, 71 फैक्स : 0712-2592073
ई-मेल : cmd@moil.nic.in, वेबसाईट : www.moil.nic.in
CIN : L99999MH1962GO1012398

संदेश

प्रिय हिन्दी प्रेमियों !

आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। प्रसन्ता का विषय है कि राजभाषा के प्रचार–प्रसार को समर्पित हिंदी पत्रिका 'मॉयल भारती' का एक और अंक प्रकाशित होने जा रहा है। राजभाषा विभाग ने इस पत्रिका के प्रकाशन का दायित्व लिया है, जिसमें हमारे कर्मचारीगण उत्साह से जुड़ रहे हैं, जो कि निःसंदेह प्रशंसनीय है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका 'मॉयल भारती' अपनी स्तरीय गुणवत्ता से न सिर्फ राजभाषा हिन्दी बल्कि अन्य भाषाओ में प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं के बीच अपनी अनुपम छटा बिखेरती रहेगी।

पत्रिका के चतुर्थ अंक के लिए अपनी शुभकामना प्रेषित करते हुए मुझे हर्ष महसूस हो रहा है।

उषा सिंह

(उषा सिंह)

पी.व्ही.व्ही. पटनायक
निदेशक (वाणिज्य),
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड, नागपूर-440013
दूरभाष : 0712-2592070, 71 फैक्स : 0712-2592073
ई-मेल : cmd@moil.nic.in, वेबसाईट : www.moil.nic.in
CIN : L99999MH1962GO1012398

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा विभाग की पत्रिका 'मॉयल भारती' का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में जो दर्जा मिला है उसे और अधिक पुष्ट करने में हमारी सक्रिय भूमिकाएं बहुत ही आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हैं। मॉयल उसी लक्ष्य की ओर अग्रसर है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का अवसर मिलेगा।

अंत में, मैं पत्रिका के चतुर्थ अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

(पी.व्ही.व्ही. पटनायक)

शरत चंद तिवारी
मुख्य सतर्कता अधिकारी
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड, नागपूर-440013
दूरभाष : 0712-2592070, 71 फैक्स : 0712-2592073
ई-मेल : cmd@moil.nic.in, वेबसाईट : www.moil.nic.in
CIN : L99999MH1962GO1012398

संदेश

मुझे बेहद खुशी है कि मॉयल लिमिटेड राजभाषा विभाग की पत्रिका मॉयल भारती का प्रकाशन किया जा रहा है। मेरा यह मानना है कि किसी भी संगठन की पत्रिका उस संगठन का दर्पण होती है।

इस तरह की गृह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति को बाहर लाने का अवसर प्रदान करती है। हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दृष्टि से प्रत्येक छमाहीः इस पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है जो हमारे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है।

मैं इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

शरत चंद तिवारी

(शरत चंद तिवारी)

जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं!

प्रिय साथियों,

आप सभी को बहुत ही दुख: के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि कोविड-19 की महामारी से अब तक हमारे तीन कर्मचारी एवं एक आश्रित का देहांत हो गया है। मैं इनके लिए शोक जताते हुये आपके साथ यह भी साझा करना चाहता हूँ की मुझे ज्ञात हुआ है कि चारो व्यक्ति बीमारी के समय इलाज कराने के लिये स्वयं की व्यवस्था करके प्राइवेट अस्पताल गये। कुछ समय बाद जब स्थिति बिगड़ने लगी तब उन्हे नागपुर भेजा गया, और कंपनी के पैनल अस्पताल में भर्ती कराया गया। सभी प्रकार की कोशिश करने के बावजूद हम इनको बचा नहीं पाये क्योकि इलाज में काफी देर हो चुकी थी।

कोविड-19 की महामारी के शुरुवात के समय से ही कंपनी सभी प्रकार की सुरक्षा/सुविधा व व्यवस्था का ध्यान दे रही है। हमारे डाक्टर भी किसी भी प्रकार की मदद के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं। बहुत सारे पैनल अस्पताल से भी टाईअप कर के रखा गया है ताकि जरूरत पड़ने पर हमारे कर्मचारी/आश्रितों को सही समय पर उचित इलाज मिल सके। मेरा हर कर्मचारी से निवेदन है कि आप इन व्यवस्थाओं का सही तरीके से उपयोग करें और लाभ उठायें।

आप सभी से अपील है कि कोविड-19 महामारी से आप अपना व अपने परिवार की सुरक्षा का विशेष ध्यान दें। अगर आपको कोविड-19 के लक्षण दिखते हैं तो आप तत्काल टेस्ट करायें व स्थिति बिगड़ने से पहले कंपनी के डाक्टर से संपर्क करें। अत्यंत आवश्यक है कि उनके द्वारा दी गयी सलाह का पालन करें ताकि आपको समय पर सही उपचार दिया जा सके।

हमारे देश मे कोविड-19 की स्थिति सुधर रही है। फिर भी आपसे पुनः अनुरोध है कि कृपया अपना व अपने परिवार का ध्यान रखें। सामाजिक दूरी बनाये रखें, मास्क का प्रयोग करें, अपने हाथों को बार-बार धोयें और बिना जरूरत के घर से बाहर न निकले। मै विश्वास रखता हूँ कि आगे हम ऐसी कोई असावधानी न करें जिसके कारण अपना कोई कर्मचारी या उसके परिवार के सदस्य को खोना पड़े।

सही से मास्क पहनें

हाथ धोएं बार बार

निभाएं दो गज की दूरी

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

कर्मचारी ही मॉयल के लिए पहले

मेरे प्यारे साथियों,

आप सब जानते है कि नया साल बस आने ही वाला है। मैं इस अवसर पर आपके और आपके परिवार के सदस्यों के लिये 2021 सुख और समृध्दि संपूर्ण हो यह कामना करता हूं। मुझे उम्मीद है कि कोविड–19 महामारी के कारण उभरी हुई चुनौतियां जल्द ही समाप्त हो जाएंगी और हम 2021 से सामान्य जीवन जी पाएंगे।

कोविड – 19 महामारी के कारण मार्च 2020 के मध्य से लगाये गए लाकडाउन के वजह से वित्त वर्ष के शुरुवात के पहले कुछ महीनों में उत्पादन प्रभावित हुआ है। मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि कुछ प्रतिबंधों के साथ काम करने के बावजूद, आपने पिछले वर्ष की तुलना में वर्तमान वर्ष के सितंबर और अक्टूबर में उत्पादन पिछले वर्ष के इन दो माहों से ज्यादा किया है। नवंबर का उत्पादन दीपावली के छुटिट्यों के कारण थोडा कम है। इस कठिन परिस्थिति में उत्पादन की बढ़ोत्तरी केवल हमारे मजदूर / कर्मचारियों के कठिन परिश्रम, इमानदारी, समर्पण और पूर्ण सहयोग के कारण संभव हुआ है, जिसके लिए मॉयल का हित हमेशा पहले रहा है। हमारे सारे यूनियनो के सक्रिय समर्थन ने भी इस उपलब्धि में एक बडी भूमिका निभाई है। मैं आप सभी का और सभी यूनियन का तहे दिल से अभिनंदन करता हूं, जो हमेशा कंपनी के हित को अपने हित से भी बडा मानते है।

मैं इस अवसर पर नये वेतन समझौते के संबंध में हुई प्रगति को आपके साथ साझा करना चाहुंगा। मुझे भली भाँति ज्ञात है कि आप नये वेतन समझौता लागू होने का बेसब्री से इंतजार कर रहें हैं। मैंने आपको पहले ही सूचित कर दिया है कि श्रम मंत्रालय, भारत सरकार व्दारा संघ की मान्यता के मुददे के निपटारे के तुरंत बाद हमने अपने मान्यता प्राप्त संगठन के साथ वेतन समझौता के लिए एक सामान्य समझ पर पहुंचने के लिए निरंतर चर्चा की ताकि हम इस दिशा में आगे बढ़ सके। यहां तक कोविड 19 महामारी के दौरान लाकडाऊन अवधि में भी सभी सावधानियों को ध्यान में रखते हुये, बैठकों का आयोजन किया गया था। इस अथक किए गए प्रयास का ही यह परिणाम है कि मान्यता प्राप्त संगठन के साथ समझौता ज्ञापन पर 16 जुलाई 2020 को हस्ताक्षर किया जा चुका है। मैं अभी आपके साथ समझौते का विवरण साझा नहीं कर सकता क्योंकि यह अभी तक अनुमोदित नहीं हुआ है। लेकिन मेरे प्रिय साथियों, मैं आपको भरोसा दिलाना चाहता हूँ कि आपको जो संशोधित पैकेज मिलेगा वह बहुत संतोषजनक होगा और इससे आपके और आपके परिवार की जीवन शैली में और भी सुधार आयेगा।

आपको यह विदित होना चाहिए कि सरकारी कंपनी के लिए लागू होने वाले नयें वेतन समझौता के लिए सभी पूर्ण प्रक्रिया का पालन करना अनिवार्य होता है। बोर्ड की मंजूरी के बाद, प्रस्ताव को संबंधित मंत्रालय व्दारा अनुमोदित किया जाना है। इसके बाद, एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए जायेंगे जहां श्रम विभाग के अधिकारी भी मौजूद होंगे। वेतन समझौता के लिए ये कदम कानूनी रुप से महत्वपूर्ण है, जो कर्मचारियों के हित में है।

मेरे प्यारे दोस्तों, मैं आप सभी से धैर्य रखने की अपील करुँगा। हमने पहले ही इस्पात मंत्रालय को विवरण के साथ प्रस्ताव भेज दिया है और नियमित रुप से अनुमोदन के लिए चर्चा कर रहें है। हम शीघ्र से शीघ्र वेतन समझौता प्रस्ताव के लिए उचित अनुमोदन प्राप्त करने के लिए सभी प्रयास कर रहें है। उसके बावजूद मुझे कुछ कर्मचारियों से रिपोर्ट मिल रही है कि कुछ लोग इस मौके का फायदे उठाने की कोशिश कर रहे है और वेतन समझौते के बारे में कई अफवाहें फैलाकर आपको भ्रमित किया जा रहा है। मेरा निवेदन है कि कृपया ऐसी अफवाहों पर ध्यान न दें।

आप सभी से अपील है कि धरना, विरोध, आंदोलन आदि जैसी किसी भी गतिविधि को न अपनाएं। क्योकि प्रबंधन वेतन समझौता का अनुमोदन जल्दी से जल्दी लाने का प्रयास कर रहा है।

इस संबंध में मै आपको याद दिलाना चाहुंगा कि हाल ही के विडियो मॅसेज के माध्यम से मैने कर्मचारियों / श्रमिको को प्रोत्साहन भुगतान नही मिलने के बारे में सुचित किया था।

क्योकि वित्तिय वर्ष 2019-20 कंपनी केवल फेयर MoU रेटिंग प्राप्त करने में सक्षम थी। किसी भी समय को बर्बाद न करते हुये आपके प्रबंधन ने एक नई प्रोत्साहन योजना तैयार की और एक महीने से भी कम समय की रिकॉर्ड अवधि में उसी की आवश्यक स्वीकृति प्राप्त की, जिसके तहत दीपावली से पहले हमारे कर्मचारियों को एक अच्छा प्रोत्साहन राशि का भुगतान मिल पाया। यह प्रोत्साहन योजना को प्रबंधन ने आप सभी कामगारों के लाभ के लिये बनाया और इसे MoU प्रणाली से अलग किया गया क्योंकि ये समय की मांग थी। ऐसे पहल लेने वाले प्रबंधन पर आपको पूरी तरह से भरोसा करना चाहिए, जो हमेशा अपने कर्मचारियों के हित को प्राथमिकता देता है।

अंत में, मैं एक बार फिर से अपने सभी कर्मचारियों से अनुरोध करुंगा कि प्रबंधन पर और आपके यूनियन पर पूर्ण विश्वास रखें हम हमेशा आपके साथ खड़े रहेंगे और आपके हित में काम करेंगे। कृपया किसी भी अफवाह पर ध्यान न दें जो आपको कंपनी के लिए पूरे दिल से काम करने से विचलित करती है। यह समय कंपनी के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है ताकि हम उत्पादन को अधिकतम कर सकें। बेहतर प्रोत्साहन योजना की तरह, नए वेतन समझौता पैकेज का भी पालन किया जाएगा। आइए, हम अपनी कंपनी को और अधिक समृध्द बनाने के लिए एकजुट होकर काम करते रहें और यही बात हमें खुश और समृध्द भी बनाएगी।

आप सभी को एक बार फिर से नव वर्ष 2021 की बहुत बहुत शुभकामनाएं।

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

कार्यालयीन काम-काज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2020-21 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.स.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मुल पत्राचार (तार बेतार, टेलेक्स, फैक्स, ई–मेल आदी सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख 100% क्षेत्र के राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख 90% क्षेत्र के राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख 85% क्षेत्र के राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को

2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पणी	75%	50%	30%
4.	हिंदी टंकक, आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
5.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वंय अथवा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
6.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपिक)	100%	100%	100%
7.	द्विभाषी प्रशिक्षण समाग्री तैयार करना	100%	100%	100%
8.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोडकर, पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रिय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर खर्च की गई राशि सहित हिंदी पुस्तको आदि की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
9.	कंप्युटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रानिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
10	वेबसाइट	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी
11	नगरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डो आदि का प्रदर्शन	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी
12	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% न्युनतम	25% न्युनतम	25% न्युनतम
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% न्युनतम	25% न्युनतम	25% न्युनतम
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधिन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
13 (क) (ख) (ग)	राजभाषा संबंधी बैठकें हिंदी सलाहकार समिति नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (कम से कम) वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
14	कोड, मेनुअल, फॉर्म, प्रकिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		
15	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहॉ संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	"क" क्षेत्र 40%	"ख" क्षेत्र 30% (न्यूनतम अनुभाग)	"ग" क्षेत्र 20%
सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहॉ अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्यक्षेत्र का 40% , "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।				

राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) एवं नियम 10(4) का महत्व।

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में राजभाषा विभाग द्वारा जारी 1976 के राजभाषा संबंधी नियमों का बहुत ही अधिक महत्व है। इसमें कुल 12 नियमों का समावेष है, जिनका कार्यान्वयन करना अनिवार्य होता है। किंतु कुछ जानकारी के अभाव अथवा व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण इन नियमों का संपूर्ण कार्यान्वयन सफल नहीं हो पाता है। इनमें राजभाषा नियम 10 (4) और 8 (4) बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। राजभाषा नियम –10 (4) अर्थात किसी कार्यालय के 80 प्रतिषत कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान होने पर कार्यालय का भारत के गजट में अधिसूचित ; छवजपपिमक द्धहोना।

किसी भी कार्यालय को नियम 10 (4) के अंतर्गत अधिसूचित कराने की पात्रता अथवा शर्त यह है कि कार्यालय के 80 प्रतिषत कार्मिकों द्वारा कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया जान आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित व्याख्या की गयी है:–

हिंदी में कार्यसाधक ज्ञानः–

यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिकुलेशन अथवा समतुल्य अथवा उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण की हो अथवा निर्धारित परीक्षा (जैसे हिंदी षिक्षण योजना के अंतर्गत प्राज्ञ, प्रवीण अथवा प्रबोध) उत्तीर्ण कर ली हो अथवा निर्धारित प्रपत्र में यह घोषित किया है कि उन्हें हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसे हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है।

घोषणा पत्र का प्रारूप निम्न प्रकार है–

• घोषणा पत्र •
Declaration

मैं एतद्द्वारा यह घोषणा करता हूँ कि निम्नलिखित के आधार पर "मुझे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है। मैंने हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।"

I hereby declare that according to following "I am proficient in Hindi" I have working knowledge of Hindi.

तिथि : **हस्ताक्षर**
Date : **Signature**

जब किसी कार्यालय के 80 प्रतिशत कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान कर लिया हो तो ये माना जाएगा कि उस कार्यालय के कर्मचारी को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है और ऐसे कार्यालय को भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया जाएगा।

कार्यालय का भारत के गजट में अधिसूचित होने पर कार्यालय प्रमुख द्वारा अपने कार्यालय के अनुभागों अथवा कार्मिकों को राजभाषा नियम–8 (4) के अंतर्गत अपना संपूर्ण कार्य हिंदी में करने के लिए विनिर्दिष्ट (Specified) करते हुए आदेश जारी किया जाता है। यह आदेश द्विभाषी रूप में व्यक्तिशः जारी किए जाते हैं। इस घोषणा का प्रारूप निम्न प्रकार बनाया जा सकता है।

भारत सरकार
(मंत्रालय का नाम)
(विभाग का नाम)
(कार्यालय का नाम)

संख्या :..... दिनांक :00 / 00 / 0000

कार्यालय आदेश

विषय :– सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए हिंदी में प्रवीण अधिकारी / कर्मचारी को विनिर्दिष्ट करना।

(कार्यालय का नाम.....), राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 के नियम 10(4) के अधीन भारत के राजपत्र में अधिसूचित है। अतः उक्त नियम के नियम 8(4) के अधीन हिंदी में प्रवीण श्री / श्रीमती (अधिकारी / कर्मचारी का नाम) को कतिपय विषयों से संबंधित समस्त कार्य केवल हिंदी में करने के लिए विनिर्दिष्ट किया जाता है।

यदि हिंदी में काम करने में उक्त अधिकारी / कर्मचारी को कोई विशेष कठिनाई हो तो कार्यालय के हिंदी अनुभाग से आवश्यक सहायता ली जा सकती है।

यह आदेश जारी होने की तारीख से प्रभावी होगा।

हस्ताक्षर
(कार्यालय प्रमुख का नाम)

प्रतिलिपि :–
कार्यालय के सभी संबंधित अधिकारी / कर्मचारी।

Govt. of India
(Name of Ministry)
(Name of Department)
(Name of Office)

No: ---------- Dated: 00/00/0000

OFFICE ORDER

Subject:- Specifying the officer/official who are proficient in Hindi for doing official work in Hindi.

The office of (name of office) is notified in Gazette of India under Rule 10(4) of the Official Languages (Use for Official purpose of the union) Rules, 1976. Therefore, in pursuance of Rule 8(4) of the said Rules, Shri/ Smt. (Name of officer/official) of this office who possess proficiency in Hindi is specified to use Hindi alone in dealing with certain subjects.

If the above officer/official face any specific difficulty in doing work in Hindi, necessary assistance may be obtained from Official Language Section of this office.

This order will come into force with effect from the date of issue.

Signature
(Name of Head of Office)

Copy to:-
All concerned Officer/Official of this office.

शब्दकोश
अंग्रेजी से हिन्दी

अंग्रेजी	हिन्दी
Achieve	प्राप्त करना
Achievement	उपलब्धि
Action	कार्यवाई
Action plan	कार्य योजना
Adequate	पर्याप्त
Adjustment	समायोजन
Advice	परामर्श
Advise	सलाह देना
Agenda	कार्यसूची
Agreement	समझौता
Alert	सतर्क करना
Allegation	आरोप
Bargain	सौदा करना
Barrier	बाधा
belief	विश्वास
benefit	फायदा
blame	दोषी ठहराना
board of directors	निदेशक मंडल
branch office	शाखा कार्यालय
brief	संक्षिप्त
budgetary control	बजट नियंत्रण
budget provision	बजट प्रावधान
damage	क्षति
date of departure	प्रस्थान तिथि
date of receipt	प्राप्ति तिथि
day-to-day work	दैनिक कार्य
dearness relief	महंगाई राहत
decide	निर्णय लेना
declare	घोसणा करना
decorum	मर्यादा
dedication	समर्पण
deduction	कटौती
defence	बचाव
deficiency	कमी
departure	प्रस्थान
dependent	आश्रित
designate	मनोनीत
designation	पदनाम
despatch	प्रेषण

अंग्रेजी	हिन्दी
disagreement	मतभेद
develop	विकसित
development	विकास
difficulty	कठिनाई
direct	प्रत्यक्ष
direct recruitment	सीधी भर्ती
disinvestment	विनिवेश
dispute	विवाद
disqualify	अयोग्य
distribute	वितरण करना
divide	विभाजित करना
draft	मसौदा
duration	अवधि
eligibility	पात्रता
empower	सशक्त करना
enclose	अनुलग्न
encourage	उत्साहित करना
enquiry	पूछताछ
estimate	अनुमान
evaluation	मूल्यांकन
example	उदाहरण
explanation	स्पष्टीकरण
facility	सुविधा
fact	तथ्य
false	झूठा
format	प्रारूप
fortnight	पखवाड़ा
foundation	स्थापना
gazette	राजपत्र
notification	अधिसूचना
get together	एकत्रित होना
honourable	माननीय
ideal	आदर्श
identification	पहचान
incompetency	अक्षमता
inexpedient	अनुचित
inspection	निरीक्षण
instigation	उकसाना
institute	संस्थान

कुछ प्रचलित हिंदी शब्द जिन्हे व्यावहारिक अशुद्ध लिखा या उच्चारित किया जाता है, जानिए उनके शुद्ध रूप

अशुद्ध	शुद्ध
बहोत	बहुत
हुवा	हुआ
कौवा	कौआ
दिया	दीया
ग्यारा	ग्यारह
अठरा	अठारह
अलंकारिक	आलंकारिक
थंडी	ठंडी
कवित्री	कवयित्री
अध्यन	अध्ययन
आवसक्ता	आवश्यकता
अनाधिकार	अनधिकार
अनुशरण	अनुसरण
अभ्यस्थ	अभ्यस्त
अनुकुल	अनुकूल
अनिष्ठ	अनिष्ट
आधीन	अधीन
इकट्ठा	इकट्ठा
उज्वल	उज्ज्वल
उपलक्ष	उपलक्ष्य
कैलाश	कैलास

शुद्ध	अशुद्ध
घनिष्ट	घनिष्ठ
चिन्ह	चिह्न
प्रल्हाद	प्रह्लाद
जेष्ठ	ज्येष्ठ
श्रिमति	श्रीमती
ईर्षा	ईर्ष्या
तत्व	तत्व
महत्व	महत्त्व
उन्नती	उन्नती
लिक्खा	लिखा
प्रज्ज्वलित	प्रज्वलित
महात्म	माहात्म्य
त्यौहार	त्योहार
सन्मान	सम्मान
शारिरिक	शारीरिक
स्थाई	स्थायी
हिंदुस्थान	हिंदुस्थान
स्वास्थ	स्वास्थ्य
शताब्दि	शताब्दी
व्यवहारिक	व्यावहारिक
आंगन	आँगन

मॉयल भरवेली में दिव्यांग वर्ग को ट्रायसायकल वितरित

बालाघाट(जबलपुर एक्सप्रेस)।

स्थानीय मॉयल लिमिटेड प्रबंधन द्वारा अपने सामाजिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए सामाजिक उत्तरदायित्व सीएसआर योजना के अंतर्गत प्रबंधन द्वारा दिव्यांग जन सहायता में विश्राम गृह भरवेली में रविवार को भरवेली, हीरापुर, तवाझरी के दिव्यांग साथियों को कंपनी की ओर से सायकिल वितरित करके उन्हें आवागमन में होने वाली परेशानी को दूर करने का प्रयास किया गया है। इसके बायफ संस्था का भी महत्वपूर्ण योगदान है जो मॉयल क्षेत्र में भिन्न-भिन्न तरह के रचनात्मक एवं सकारात्मक कार्य करके जनता को लाभ पहुंचा रही है। इस टायसायकल वितरित

कार्यक्रम में खान प्रबंधक उम्मेद सिंह भाटी, सतर्कता विभाग के प्रभारी ए.के. गायकवाड़, भू-गर्भ अधिकारी विनय राहंगडाले, कार्मिक विभाग के प्रमुख असीम शेख, सिविल विभाग के प्रमुख विशाल मेश्राम, वित्त विभाग के श्रीनिवास रामावत इत्यादि की उपस्थिति प्रमुख थी। खान प्रबंधक भाटी के अनुसार मॉयल लिमिटेड खनन क्षेत्र के अतिरिक्त खदान के आसपास स्थित ग्रामों के ग्रामीण विकास में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ कंपनी अपने सामाजिक उत्तदायित्व के निर्वहन में भी निरंतर नियम अनुसार सहयोग प्रदान करके अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। इस प्रकार के समाज उपयोगी कार्य विगत कई वर्षों से निरंतर चल रहे हैं।

हिन्दी पखवाडा, 2020

(14 सितम्बर से 29 सितम्बर)

14 सितम्बर से 29 सितम्बर 2020 निदेशक मानव संसाधन ने दीप प्रज्जवलित कर हिन्दी पखवाडा का शुभारम्भ किया। निदेशक मानव संसाधन ने कहा कि हिन्दी बहुत ही सरल व सहज भाषा है हर देश अपनी भाषा पर गर्व करता है और उसे ज्यादा से ज्यादा अपनाता है। हिन्दी हमारी मातृ भाषा है हमें अपना संपूर्ण कार्य हिंदी में ही करना चाहिए। हिन्दी भाषा दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा है। दुनिया में सर्वप्रथम संस्कृत भाषा का निर्माण हुआ और उसके बाद जल्द ही देवनागरी लिपी का अस्तित्व आया, जिसे आज हम हिंदी के नाम से जानते है। हिंदी संस्कृत भाषा का सरल अनुवाद है यह हमारी राजभाषा है। किसी देश की भाषा उसकी उन्नति का मार्ग होती है। आइए हम इसे ज्यादा से ज्यादा अपनाये और उन्नति के पथ पर अग्रसर हो। गृह मंत्री के संदेश को सभी के सामने प्रेषित किया व मॉयल कामगार संगठन के महामंत्री ने हिन्दी के महत्व को बताते हुये इस्पात मंत्री के संदेश को प्रेषित किया। पखवाडा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में अधिक संख्या में कर्मचारियों ने भाग लिया। तथा सर्वाधिक हिन्दी में पत्राचार करने की सभी विभाग व खदान से जानकारी मंगायी गई थी। क क्षेत्र में तिरोडी प्रथम एवं बालाघाट द्वितीय तथा ख क्षेत्र में गुमगांव प्रथम व बेलडांगरी खान द्वितीय मुख्यालय में स्थापना विभाग प्रथम एवं सर्तकता विभाग द्वितीय रहा।

हिंदी की होड़ किसी प्रांतीय भाषा के साथ नहीं, बल्कि अंग्रेजी के साथ है। – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

राष्ट्रीय एकता सप्ताह

उज्जवला वानखेडे
सहायक सह टंकक

राष्ट्र के विकास में महिलाओं का महत्व एवं भूमिका

(प्रथम पुरस्कृत निबंध)

महिलायें समाज के विकास में एवं तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनके बिना विकसित एवं सम्रद्ध समाज की कल्पना भी नही की जा सकती। महिलायें परिवार बनती है, परिवार से घर बनता है, घर से समाज बनता है और समाज ही देश बनता है। इसका सीधा अर्थ यही है कि महिला का योगदान हर जगह है।

हमारे समाज में महिला अपने जन्म से लेकर म्रत्यु टक एक अहम भूमिका निभाती है। अपनी सभी भूमिकाओं में निपुणता दर्शाने के बावजूद आज के आधुनिक युग में महिला पुरुष से पीछे दिखाई देते है। पुरुष प्रधान समाज में महिला कि योग्यता को आदमी से कम देखा जाता है। सरकार द्वारा जागरूकता फैलाने वाले कई कार्यक्रम चलाने के बावजूद महिला कि जिंदगी पुरुष कि जिंदगी के मुकाबले काफी जटिल हो गई है। महिला को आपनी जिंदगी का ख्याल तो रखना ही पड़ता है। साथ में पूरे परिवार का भी ध्यान रखना पड़ता है। वह पूरी जिंदगी बेटी, बहन, पत्नी, माँ, एसएस और दादी जैसे रिश्तो को ईमानदारी से निभाने के बाद भी वह पूरी शक्ति से नौकरी करती है, ताकि अपने परिवार का भविष्य उज्वल बना सके।

अगर हम महिलाओं की आज की अवस्था को पिछले अवस्था से तुलना करे तो यह साफ दिखता है कि हालत में खुछ तो सुधार हुआ है। महिलायें नौकरी करने लगी है। घर के खर्चो में योगदान देने लगी है। कई क्षेत्रों में तो महिलायें पुरुषो से आगे निकल गई है। दिन प्रतिदिन लड़कियां ऐसे दृऐसे कीर्तिमान बन रही है, जिस पर न सिर्फ परिवार और समाज को बल्कि पूरे देश को गर्व महसूस हो रहा है।

बीते कुछ सालो में सरकार द्वारा अनगिनत योजनाएँ चलाई गई है जो महिलाओं को सामाजिक बेड़ियां तोड़ने में मदद कर रही है तथा साथ ही साथ उन्हे आगे बढने में प्रेरित कर रही है। सरकार ने पुराने वक्त के प्रचलनों को बंद करने के साथ दृसाथ उन पर कानून रोक लगा दी है। जिनमे मुख्य बाल विवाह, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, बाल मजदूरी घरेलू हिंसा आदि। इन सभी को कानूनी रूप से प्रतिबंध लगाने के बाद समाज में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार आया है। महिला अपनी पूरी जिंदगी अलग–अलग रिश्तों में खुद को बांधकर दूसरों की भलाई के लिए काम करती है।

हमने आज तक महिला को बहन, माँ, पत्नी,बेटी, आदि विभिन्न रूपो मे देखा है, जो हर वक्त परिवार के मान– सम्मान को बढ़ाने के लिए तैयार रहती है। शहरी क्षेत्रों में तो फिर भी हालत इतने खराब नहीं है पर ग्रामीण इलाकों में महिला की स्थिति चिंता करने योग्य है। सही शिक्षा की व्यवस्था न होने के कारण महिलाओं की दशा दयनीय हो गई है। एक औरत बच्चे को जन्म देती है और सहनशीलता के साथ बिना तर्क किये अपनी भूमिका को पूरा करती है।

रिश्ते

राजेश श्रीवास्तव
उपनिदेशक
(राजभाषा एवं तकनीकी)
गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग,
एन.डी.सीसी. भवन, नई दिल्ली

कभी-कभी सोचता हूँ
रिश्ते निभाना जरूरी है
या रिश्ते बचाना जरूरी है?
कुछ भी हो लेकिन एक बात तो तय है
भले ही निर्दोष शर्मिंदा रहें,
लेकिन सबकी संवेदनाएं जिंदा रहें,
इसलिए कभी-कभी सही होकर भी
गलत से हारना पड़ता है,
और रिश्ते बचे रहें,
इसलिए कई बार खुद को मारना पड़ता है।
ये वो दौर है जहाँ सच के सीने पर
बस झूठ पलते हैं
रिश्ते निश्छल दिखाई दें
इसलिए हम अक्सर खुद को ही छलते हैं।

दोषी कौन?

मैं जब पूछता हूँ दोषी कौन है,
तो बस झूठ को छोड़कर हर कोई मौन है।
कोई डरा हुआ है,
कोई मरा हुआ है,
किसी को चिंता सावन की,
किसी को पूस की है,
किसी का घर कच्चा है,
किसी की झोंपड़ी फूस की है,
रास्ते में शिकारियों के अहाते हैं,
और बच्चे बहुत दूर पढ़ने जाते हैं,
किसी की दहलीज पर भूख लेटी है,
किसी के घर में जवान बेटी है,
कोई अपंग है, किसी का रोग असाध्य है,
कोई विवश है, कोई बाध्य है,
सहमा है सतू,
भोलू भयाक्रांत है,
दहशत में है दलजीत, बेजुबान जॉन है,
मैं जब पूछता हूँ दोषी कौन है,
तो बस झूठ को छोड़कर हर कोई मौन है।

रामअवतार देवांगन
महामंत्री, मॉयल कामगार संगठन

रामराज्य की अवधारणा क्या है? इस पर कई जमाने से बहस होती रही है, सबकी अपनी-अपनी धारणा और मत रहे है, किसी ने इसे धर्म से जोडा, तो किसी ने इसे समाजिकता का रूप दिया, किसी ने ईश्वरीय अवधारणा के तौर पर परिभाषित किया। इस विषय पर महात्मा गांधी के समय भी रामराज्य को लेकर काफी बहस होती थी। तब उन्होंने कई मौको पर इस धारणा को लेकर अपनी राय जाहिर की थी। जिसे मैं अपनी बोली, अपनी मातृभाषा एवं अपनी राष्ट्रभाषा में अपनी कलम से आप तक पहुंचा रहा हूँ।

16 जनवरी 1925 को महिलाओं की एक विशेष सभी में उन्होंने कहा था, कि मै सदा से कहते आया हूँ, कि जब तक सार्वजनिक जीवन में भारत की स्त्रीयां महत्वपूर्ण रूप से भाग नही लेती, तब तक हिंदुस्तान का उद्धार नही हो सकता, लेकिन सार्वजनिक जीवन में वही भाग ले सकेंगी जो तन और मन से शुद्ध और पवित्र हो। रामराज्य शब्द से कई भ्रांतिया रही है, इसें अर्थ को लेकर भी कई भ्रांतिया रही है, कई विद्वान इस शब्द के प्रयोग से बचते रहे है, क्योंकि इस शब्द के अर्थ का नये सिरे से राजनितिक दुरूपयोग हो रहा है, जो सार्वजनिक तौर पर दिखाई देता है और इसके संकीर्ण अर्थ को राजनितिक रूप स्थापित करने की कोशिश की जा रही हैं। किन्तु कई मौकों पर खुद गांधी जी ने इस पर स्पष्टीकरण दिया था।

20 मार्च 1930 को हिन्दी पत्रिका नवजीवन में ''स्वराज्य और रामराज्य'' लेख में गांधी जी ने कहा था, स्वराज्य के कितने ही अर्थ क्यों न निकाले जाये, पर मेरे नजदीक तो उसका त्रिकाल सत्य एक ही अर्थ है, और वह है, रामराज्य। उनका कहना था, यदि किसी को रामराज्य शब्द बुरा लगे तो मै उसे धर्मराज्य कहुंगा, क्योंकि रामराज्य शब्द का भावार्थ यह है कि उसमें गरीबों और दी-हीनों की संपूर्ण रक्षा होगी, सब कार्य धर्मपूर्वक किये जायेंगे और जनमत का हमेशा आदर किया जायेगा। जबकि वर्तमान में रामराज्य को एक खास धार्मिक संप्रदाय के साथ जोड़ा जा रहा है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है, गांधी जी के समय भी ऐसा प्रयास हुआ था। इसका जवाब देते हुए गांधी जी ने 26 फरवरी 1947 को एक प्रार्थना सभा में कहा था कि जिस आदमी या व्यक्ति की कुर्बानी की भावना अपने संप्रदाय और धर्म आगे नही बढ़ती, वह खुद तो स्वार्थी बनता है, और अपने संप्रदाय और धर्म को भी स्वार्थी बनाता है मेरा रामराज्य ऐसा नही है। क्योंकि मैने अपने आदर्श समाज को रामराज्य का नाम दिया है, इसलिए कोई यह समझने की भूल न करे कि रामराज्य का अर्थ, हिन्दूओं का शासन है। मेरा ''राम'' तो खुदा, गॉड, ईश्वर, अल्लाह और आदर्श समाज का ही दूसरा नाम है जहां सबको समान अधिकार हो, मै खुदाई राज चाहता हूँ, जिसका अर्थ है, इस धरती पर परमात्मा का राज्य। ऐसे राज्य की स्थापना से न केवल भारत की संपूर्ण जनता का, संपूर्ण समाज का बल्कि समग्र संसार का कल्याण हो।

25 मई 1947 को एक साक्षात्कार में महात्मा गांधीजी ने आर्थिक, असमानता को रामराज्य के लिए भयानक खतरा बताते हुए कहा था, कि आज आर्थिक असमानता है, समाज और धर्म की जड़ में आर्थिक असमानता है, जहां-तहां आर्थिक असमानता है, जिससे आदर्श समाज और रामराज्य की कल्पना करना भी मुश्किल है, एक तरफ कई लोगों के पास करोड़ो है, तो बाकि लोगों के पास सुखी रोटी भी नसीब नही होती, ऐसी भयानक असमानता में रामराज्य का दर्शन करने की आशा कभी न रखी जाये।

वर्तमान में यह दो ध्रुवों की खाई लगातार बढ़ती जा रही है, वर्तमान में सरकारें अपनी जिम्मेदारियों से पीछा छुड़ाकर आदर्श समाज की, गांधी जी की संकल्पना को तार-तार कर करोड पतियों को अरबपति बना रही है। और गरीबों को कटोरा पकड़ने पर मजबुर कर रही है, पूंजीपति लबा-लब हो रहे है, और गरीब भूखमरी की ओर धकेले जा रहे है। अब वर्तमान में तो रामराज्य की संकल्पना करना भी बेईमानी है, क्योंकि रामराज्य तो तभी संभव हो सकता है जब आर्थिक एवं सामाजिक समानता हो, जात-पात धर्म-पंत, ऊँच-नीच की भावना को समाप्त कर एक आदर्श समाज की स्थापना हो। जो वर्तमान परिस्थितियों में दूर-दूर तक कहीं दिखाई नही देता। इसलिए गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में ही समाजवाद को स्वीकार कर लिया था, उनका समाजवादियों से और दूसरों से केवल यही विरोध रहा है, कि सभी सुधारों के लिए ''सत्य और अहिंसा'' ही सर्वोपरि साधन है। जो रामराज्य की संकल्पना को साकार कर सकता है।

यांत्रिकी अनुवाद बनाम इंसानी अनुवाद

अमित कुमार सिंह
वरि. प्रबंधक (कार्मिक) तिरोड़ी खान

हम लोग विज्ञान और प्रौद्योगिकी के चमत्कारों के दौर में जी रहे है। प्रायः रोज ही कुछ सुनने व देखने में आता है। विज्ञान की गति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रत्येक पॉच वर्ष में मनुष्य मात्रा के पास एकत्रा समस्त जानकारी दो गुनी हो जाती है। सरल शब्दों में कहें तो जितना ज्ञान और जानकारी मनुष्य ने 5000 वर्षो के अपने ज्ञात इतिहास में हासिल किया है, उतना अगले पॉच साल में इसमें जुड़ जाएगा। ऐसा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्रा में हुई क्रांति के कारण भी है। हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्रा को इस क्रांति ने छुआ है। जहॉ तक अनुवाद का प्रश्न है, आज कल अनुवाद कों एवं आम–आदमी के मध्य यह बात चर्चा का विषय है कि मशीनी अनुवाद इंसानी अनुवाद की जगह ले सकता हैं।

यह उल्लेख है कि ये साधन सिर्फ सुविधा मात्रा है पूर्ण अनुवादक नहीं। जिस तरह विभिन्न शब्दकोश हम अनुवादको के हथियार हैं, उसी तरह ये (मशीन टूल) और सॉफ्टवेयर भी है। जहॉ तक सटीकता का प्रश्न है, अभी तो हास्यास्पद अनुवाद और शब्दानुवाद ही देखने को मिलता है। भाव संप्रेषण अभी दूर की बात है। लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि आज कल आर्टीफीशियल इंटैलीजेंसर के क्षेत्र में तेजी से अनुसंधान हो रहे है।

आप देख सकते है कि गूगल ट्रांसलेट अब कुछ छोटे–छोटे वाक्यों का अनुवाद कर लेता है। जैसे ठीक उसी तरह जैसे अब रोबोट कुछ ऐसे काम भी करने लगे है जो कुछ वर्षो पूर्व तक अकल्पनीय थे।

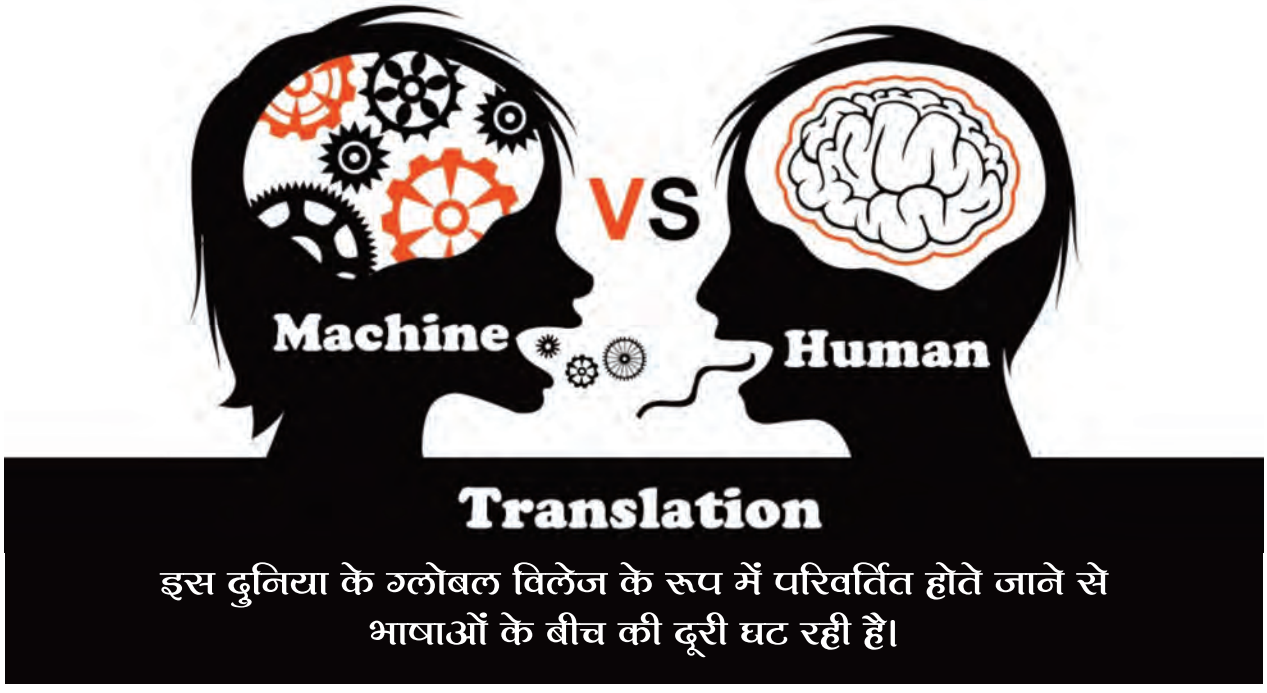

इस दुनिया के ग्लोबल विलेज के रूप में परिवर्तित होते जाने से भाषाओं के बीच की दूरी घट रही है।

लेकिन जिस तरह रोबोट कभी इंसान नहीं हो सकते, उसी तरह यांत्रिक अनुवाद कभी इंसानी अनुवाद की जगह नहीं ले पाएगा। जहॉ तक अनुवाद सॉफ्टवेयर बनाने और उनके सटीक होने का दावा करने वाली कंपनीयों का प्रश्न है, तो मैं अत्यंत विनम्रतापूर्वक यही कहूँगा कि फिलहाल तो यह मुमकिन नहीं है। भविष्य में यदी कभी ऐसा संभव हुआ तो आप यही पायेंगे कि इसके पीछे भी उत्कृष्टता का पुजारी कोई मनुष्य ही बैठा होगा।

देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा अन्य किसी भाषा की तुलना में अधिक व्यवस्थित है।

परिचयात्मक रूप से पहले हमें यह जानना होगा कि यांत्रिाक अनुवाद या कैट टूल्स क्या है और किस तरह ये अनुवाद में हमारे सहायक है।

मशीन अनुवाद – कुछ समय पहले मशीन अनुवाद पर खूब चर्चा हुई थी। इस बारे में काफी शोध कार्य किए गए थे। भारत में भी सीडैक ने इस क्षेत्रा में कुछ अनुसंधान किया था, लेकिन अपनी आंतरिक समस्याओं, सीमाओ और सीमित उपयोगिता के चलते इसमें कोई अधिक प्रगति नहीं हो पायी। मशीन अनुवाद का मूल रूप से सिद्वांत यह था कि अनुवाद के दौरान मानव मस्तिष्क में चलने वाले सारी प्रकिया कोई मशीन करें।

इसके लिए किसी भाषा या भाषा समूह के विभिन्न शब्दों व अर्थो तथा उसके व्याकरण को मशीन की स्मृति में सुरक्षित करके अनुवाद प्राप्त करना ही लक्ष्य था। यह कोई असंभव परिकल्पना नहीं थी, किंतु इसका कार्यान्वयन अत्यंत कठिन साबित हुआ । समय के साथ यह भी दिखने लगा कि मशीन शब्दानुवाद तो कर लेती थी, किन्तु भावानुवाद इसके बस की बात नहीं थी। इसके अलावा किसी भाषा के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिपेक्ष्य को आत्मसात करना भी मशीन के लिए संभव न था। धीरे–धीरे अनुसंधान कर्ताओ और प्रयोक्ताओं को यह समझ आने लगा कि यांत्रिाक अनुवाद की अपनी एक सीमा है तथा इसके द्वारा किए गए अनुवाद मे त्रुटि सुधार करने से बेहतर है कि स्वयं ही अनुवाद कर लिया जाये। अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद के क्षेत्रा में यांत्रिाक अनुवाद के अग्रणी उदाहरण ब्बकम ज्तंदेसंजम एवं सीडैक द्वारा विकसित डंदजतं सॉफ्टवेयर है।

कंप्यूटर सहायित अनुवाद (कैट टूल्स)–सामान्य पाठक या प्रयोक्ता मशीन अनुवाद और कैट टूल्स को एक ही चीज समझते है। जबकि इनमें पर्याप्त अंतर है।जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह कंप्यूटर सहायित है यानि अनुवाद प्रक्रिया में हमें कंप्यूटर से मदद प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया में कंप्यूटर आधारित अनुवाद टूल हमें एक नमूना अनुवाद प्रदान करता है, जो उसको स्मृति के आधार पर होता है। इस अनुवाद मे मनोवांछित संशोधन या संपादन करके कोई मनुष्य इसे प्रयोग करने योग्य बना लेता है। यह भी मूल रूप से स्मृति आधारित सिद्वांत पर कार्य करता है। प्रत्येक अनुवाद टूल में एक निहित स्मृति (मेमोरी) होती है, जो अनुवाद –दर–अनुवाद बढती जाती है। प्राथमिक रूप से विभिन्न शब्दकोष इसकी स्मृति में होते ही है। यह विशेष रूप से ऐसे कार्यालयों, जिनमें समान प्रकृति का कार्य होता हो, के लिये अत्यंत उपयोगी होते है।

हमने प्रायः ऐसा देखा है कि शासकीय कार्यालयों में होने वाले अनुवाद या पत्राचार या रिपोर्ट आदि लगभग एक ही प्रकृति के होते हैं जिनमें 80 प्रतिशत से अधिक शब्द एवं वाक्य बारंबार इस्तेमाल होते है। ऐसी सामग्री के अनुवाद में कंप्यूटर सहायित टूल से अनुवाद करने मे बहुत समय बचता है और अनुवाद में एकरूपता भी बनी रहती है।बाजार में कई कैट टूल्स उपलब्ध है, जिनमें एस. डी. एल. ट्राडोस, वर्डफास्ट आदि प्रसिद्व हैं। सभी कैटटूल्स की विशेषताएँ और सूविधाएँ एक दूसरे से कुछ अलग होती है, लेकिन ये सभी एक ही सिद्वांत पर काम करते हैं।

वर्तमान युग का शायद ही कोई पहलू हो, प्रौद्योगिकी से अनछुआ रह गया हो। ऐसे भी भाषा या अनुवाद के क्षेत्रा में भी इसका प्रयोग बढना स्वाभाविक है। इसके अलावा इस दुनिया के ग्लोबल विलेज के रूप मे तब्दील होते जाने से भाषाओं के बीच की दूरी घट रही है। दो भिन्न भाषा भाषी किसी न किसी एप्प या स्मार्टफोन सॉफ्टवेयर के प्रयोग से आराम से भाषांतरण या अनुवाद करके आपस मे संपर्क कर पा रहे है। यहॉ यह भी उल्लेखनीय है कि जिस तरह रोबोटिक सर्जरी मनुष्य और मशीन के बेहतरीन समन्वय का प्रतीक है। उसी तरह ये अनुवाद सॉफ्टवेयर या टूल भी हम सभी के लिए सहायक है। हम अनुवादकों को इन सॉफ्टवेयरों का स्वागत ही करना चाहिए क्योंकि ये हमें समृद्व करने के औजार मात्रा है। इन कैट टूल्स के चलते भविष्य में अनुवादक की भूमिका विस्तृत होकर संपादक की होने वाली है, जिसका कार्य कंप्युटर टूल द्वारा प्रस्तुत किए गए अनुवाद में आवश्यक संशोधन करना होगा।

आने वाला समय प्रौद्योगिकी और मनुष्य के आपसी समन्वय का युग होगा। एक ऐसा युग जिसकी प्रौद्योगिकी का समुचित इस्तेमाल कर के मनुष्य अपनी उत्पादन क्षमता में कई गुना वृद्वि कर लेगा। समय की आवश्यकता है कि विज्ञान के प्रयोगों और आविष्कारों के प्रति हम सकारात्मक धारणा रखें जो न सिर्फ तर्क पर आधारित हो बल्कि नैतिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से भी सुसंगत हो।

मॉयल लिमिटेड

मुख्यालय नागपुर में 32 नए आवास का निर्माण

मुख्यालय में कुल 32 नए क्वार्टर एवं नए चिकित्सा परिसर का निर्माण किया गया जिसका उदघाटन दिनांक 12.11.2020 को अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री मुकुंद पी चौधरी, निदेशक उत्पादन एवं योजना श्री दिपांकर सोम, निदेशक वित्त श्री राकेश तुमाने, निदेशक मानव संसाधन श्रीमती उषा सिंह, निदेशक वाणिज्य श्री पी व्ही व्ही पटनायक,कार्यपालक निदेशक कार्मिक श्री डी व्ही व्ही राजू, स० महाप्रबंधक नागरी श्री डी रायपुरे, स० महाप्रबंधक कार्मिक श्री नितिन पागनिस एवं वरिष्ठ अधिकारी, मॉयल कामगार संघठन के महामंत्री श्री राम अवतार देवांगन, यूनियन के सभी प्रतिनिधि व कर्मचारीगण की उपस्थिती मे सम्पन्न हुआ । सभी आवेदनकर्ता को क्वार्टर आवंटित किया गया है

अब भी मैं वही कहता हूँ जो पहले कहता था कि हिंदी सबको सीखनी चाहिए। – चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

परख क्वालिटी सर्कल

मॉयल लिमिटेड तिरोड़ी खान की परख क्वालिटी सर्कल की अनोखी उपलब्धियां।

क्वालिटी सर्कल आफ इंडिया के का अनुसरण करते हुए मॉयल लिमिटेड में क्वालिटी सर्कल का शुभारंभ 1994 में ही हो गया था। तिरोड़ी खान में पहले वीनस, तलाश और परख क्वालिटी सर्कल की टीम अस्तित्व में आयी। जिसमें परख क्वालिटी सर्कल ने अपने उद्‌भव से अब तक निरंतर उपलब्धि हासिल करते हुए मॉयल ही नहीं अपितु क्वालिटी सर्कल के नागपुर चौप्टर में भी विशेष स्थान हासिल किया है।

हैदराबाद, 2012– कानपुर, 2013– कोलकाता, 2015– चौन्नई, 2017– मैसूर, 2019– वाराणसी में शामिल होकर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। इस वर्ष भी 27 दिसम्बर को कोयंबटूर को हो रहे वर्चुअल क्वालिटी सर्कल सम्मेलन में ''जीवन की उमंग'' शीर्षक से अपनी प्रविष्टि सुनिश्चित की है। अभी तक प्रस्तुत की गई सभी स्कीट की पटकथा एवं निर्देशन दिनेश कनोजे ने किया है।

12 अगस्त 2005 को स्थापित हुए इस टीम ने 2006 से लगातार 16 चौप्टर 13 राष्ट्रीय क्वालिटी सर्कल सम्मेलन एवं 3 अंतरराष्ट्रीय क्वालिटी सर्कल सम्मेलन में सम्मिलित उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

परख क्वालिटी सर्कल की सफलता के में एक विशेष स्थान ''स्कीट कांपीटीशन'' का भी है, 2011– अभिनय मंगलू प्रसाद कठोते, राजेंद्र चौहान, दिनेश कनोजे, यशवंत बोपचे, सुरेश नंदरधने और रामविलास ने किया है। सामाजिक विद्रुपताओं को उल्लेखित करते हुए मनोरंजन के साथ समाधान के सटीक विकल्प देने के लिए हमेशा ही इस टीम ने प्रशंसा प्राप्त की है।

अमित कुमार सिंह
वरि. प्रबंधक (कार्मिक) तिरोड़ी खान

भारतीय परिप्रेक्ष्य में
बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन

प्रसिद्ध विद्वान जेरेमी फिलिप्स के अनुसार बौद्धिक सम्पदा से अभिप्राय ऐसी वस्तुओं से है, जो व्यक्ति द्वारा बुद्धि के प्रयोग से सृजित होती हैं। इसलिए किसी व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा लिखी या बनाई गई कोई रचना, संगीत, साहित्यिक कृति, कला, खोज, नाम, चित्रा ,कॉपीराइट , ट्रेटमार्क , पेटेंट अथवा डिजाइन आदी उस व्यक्ति अथवा संस्था की बौद्धिक सम्पदा कहलाती है। अपनी इन कृतियों पर सृजक व्यक्ति अथवा संस्था के अधिकार को बौद्धिक सम्पदा अधिकांष कहा जाता है इसका एक पहलू रचनात्मक है, तो दूसरा वाणिज्यिक या औद्योगिक रचनात्मक कार्यो के लिए कॉपीराइट का अधिकार (लेखक, गीतकार, संगीतकार, चित्राकार , फिल्म, कम्प्यूटर प्रोग्राम अथवा सृजक के अधिकार) दिया जाता है, ताकि कोई और उसे अपने नाम से चलन में न ला सके । व्यापारिक उद्देश्य (अर्थात पेटेंट, औद्योगिक डिजाइन और ट्रेडमार्क) से किए गए किसी आविष्कार को यह अधिकार पेटेंट के रूप में दिया जाता है, ताकि कोई दूसरा उसका उपयोग आविष्कारक की अनुमति के बगैर न कर सके।

बौद्धिक सम्पदा का इतिहास

यदि इसके अतीत में जाएं, तो सर्वप्रथम पॉच सौ ईसा पूर्व में यूनान में किताबें खरीदने–बेचने के लिए बौद्धिक सम्पदा का उपयोग किया गया था। इसके बाद पन्द्रहवीं शताब्दी में यूरोप में ज्ञान तथा विचार आदि को यह अधिकार प्रदान करने का सिद्धान्त सामने आया था। भारत 1999 में विश्व व्यापार संगठन के सदस्य मे रूप में ट्रिप्स यानी बौद्धिक सम्पदा अधिकारों के व्यापार सम्बन्धी पहलुओं पर हुए समझौते [Trade Related Intellectual Property Rights (TRIPs), में शामिल हुआ और इस विषय में लागू अन्तर्राष्ट्रीय नियम–कायदों का हिस्सा बना। उल्लेखनीय है कि 1994 में हस्ताक्षरित गैट GATT के स्थान पर ट्रिप्स की व्यवस्था की गई । ट्रिप्स अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार समझौते के रूप में उरूग्वे दौर की बातचीत की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है, जिसमें विकसित देश बौद्धिक सम्पदा अधिकारों को व्यापार के साथ सम्बद्ध करने में सफल हुए। इससे पहले वर्ल्ड इन्टलेक्चूअल प्रोपर्टी ऑर्गनाइजेशन (WIPO) ही एकमात्रा ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान था जो बौद्धिक सम्पदा के मामलों को देखता था।

ट्रिप्स में डब्ल्यूटीओ व्यवस्था के तहत वैश्विक तौर पर बौद्धिक सम्पदा के संरक्षण के लिये सामान्य नियमों के एक सेट के रूप में न्यूनतम मानको की व्यवस्था की गई है। ट्रिप्स समझौते में बौद्धिक सम्पदा अधिकारों के प्रवर्तन हेतु घरेलु प्रक्रियाओं का पालन करने और एहतियाती उपायों को अपनाने का भी प्रावधान है और डब्लयूटीओ के सदस्य देशों को ट्रिप्स प्रावधानों के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक राष्ट्रीय कानून भी बनाने होते हैं, जिसमे पेटेंट, कॉपीराइट तथा भौगोलिक संकेतकों सहित आईपीआर कानून हेतु आठ

क्षेत्रों को शामिल किया गया है। सदस्य देशों को ट्रिप्स प्रावधानों के आधार पर घरेलू बौद्धिक सम्पदा कानूनों का निर्माण करना होता है।

इस प्रकार ट्रिप्स के साथ डब्ल्यूटीओ वैश्विक तौर पर बौद्धिक सम्पदा के संरक्षण तथा प्रोत्साहन देने के लिए एक मुख्य संस्थान के रूप में उभरा है। मोस्ट फेवर्ड नेशन (MFN) का दर्जा भी ट्रिप्स के तहत ही दिया जाता है। डब्ल्यूटीओ में शामिल देश इसके तहत एक–दूसरे को सीमा शुल्क में राहत के लिहाज से यह दर्जा देते हैं यह दर्जा पूरी तरह से कारोबार के सन्दर्भ में दिया जाता है और इसका आपसी सम्बन्धों से कोई लेना देना नहीं होता है।

भारत के सन्दर्भ में ट्रिप्स का यह उछाल इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि देश में अभी शोध का माहौल काफी कमजोर होने से दवा और कई अन्य क्षेत्रों में हम दूसरों की खोजी तकनीक और प्रक्रियाओं में हेर–फेर करके ही काम चला रहे थे। लेकिन अब आई टी और अन्य क्षेत्रों में मौलिक खोजों को प्रोत्साहन मिला है। 2016 की भारत की पहली राष्ट्रीय बौद्धिक सम्पदा नीति के बाद इसमें खासतौर से तेजी आई है, जिसे जीआईपीसी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पैट्रिक किलब्राइड ने रेखांकित भी किया है।

देश में तकनीक के क्षेत्रा में प्रशिक्षण के कई कार्यक्रम चलाए गए है। आईपी को लेकर जागरूकता बढाने के लिए कई वर्कशॉप भी आयोजित किए गए हैं। कुछ अहम सुधार हुए हैं , जैसे डब्ल्यूआईपीओ इंटरनेट सन्धियॉ , जो छोटे कारोबार से सम्बन्धित हैं। इन कदमों से शोध आधारित उद्योगों में भारत का दखल बढा है। सही अर्थो में नॉलेज पॉवर बनने के लिए हमें इसी दिशा में आगे बढना ही होगा।

भारत की पहली बौद्धिक सम्पदा अधिकार नीति

भारत की आईपीआर की रैंकिंग में सुधार के लिए इसकी पहली बौद्धिक सम्पदा अधिकार नीति भी काफी हद तक मददगार रही है, इसलिए उसके सम्बन्ध में यहॉ पर सरसरी तौर पर उल्लेख करना आवश्यक होगा।

भारत सरकार ने 12 मई , 2016 को पहली बार अपनी बौद्धिक सम्पदा अधिकार, National Intellectual Property Right (IPR), नीति कि घोषणा करते हुए कहा था कि इस नीति के माध्यम से रचनात्मक भारत अभिनव भारत (Creative India: Innovative India) को बढावा मिलेगा और अन्य बातों के साथ–साथ स्वास्थ्य देखभाल, खाद्य सुरक्षा तथा पर्यावरणीय संरक्षण की दिशा में पहुॅच बढेगी।

यह नीति मानव पूॅजी के विकास यानी जनसांख्यिकी लाभांश (Demographic Dividend) की महत्ता पर भी जोर देती है। यह भारत के ट्रिप्स समझौते (The Agreement on Trade –Related Aspects of Intellectual Property Rights) के सम्बन्ध में भारत के दृष्टिकोण को भी पुष्ट करती है जिसमें वास्तविक पेटेंट को मान्यता प्रदान की जाती है। जिसके परिणामस्वरूप अन्वेषकों और छोटे उद्यम खोलने वालों को काफी फायदा होगा, लेकिन यहॉ पर भारत को जाली पेटेंट पर बहुत सावधानी बरतनी होगी।

प्रत्येक पॉच वर्ष में समीक्षा की जाने वाली इस आईपीआर नीति का उद्वेश्य आवश्यक और जीवनरक्षक दवाइयों को वहनीय कीमतों पर उपलब्ध कराने सहित आम जनता के हितों की रक्षा करते हुए नवाचार एवं उद्यमिता को प्रोत्साहन देना है। कॉपीराइट तथा सम्बन्धित अधिकारों के संरक्षण का मुख्य सामाजिक उद्वेश्य सृजनात्मक कार्यो और गतिविधियों को बढावा देकर उन्हे पुरस्कृत करना एवं समाज में अनुसन्धान और विकासात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहन देना है।

इस प्रकार राष्ट्रीय आईपीआर नीति एक विजन दस्तावेज है, जिसमें कार्यान्वयन, मॉनीटरिंग तथा समीक्षा के लिए एक संस्थागत मैकेनिज्म की व्यवस्था की गई है। इसमें भारतीय परिदृश्य के अनुरूप विश्व की सर्वोत्कृष्ट

प्रक्रियाओं को शामिल करते हुए उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

इस नीति से सरकार अनुसंधान और विकास संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों, सूक्ष्म , लघु और मध्यम उद्यमों सहित कार्पोरेट संस्थाओं, स्टार्टअप्स और अन्य भागीदारों के लिए नवाचार हेतु प्रेरक माहौल के निर्माण में सहायता मिलने की आशा की गई है। यह खुशी की बात है कि केन्द्र सरकार ने अपनी आईपीआर नीति के तहत ही हाल में स्टार्टअप्स पर 10 वर्ष तक कर छूट का लाभ देते हुए साथ में स्टार्टअप्स की परिभाषा में भी बदलाव कर दिया है। अब जिन कम्पनियों का सालाना टर्नओवर रू 100 करोड तक है, उन्हें स्टार्टअप माना जाएगा। इसके पीछे एक कारण यह भी है सरकार मेक इन इण्डिया , स्टार्टअप्स जैसी भारत के महत्वपूर्ण फ्लैगशिप पहलकदमियों को नवाचार के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण उपक्रम के रूप में देखती है।

निःसन्देह बौद्धिक सम्पदा ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का आधार है इसलिए आज के सन्दर्भ में इसका महत्व स्वंयसिद्ध है। प्रति वर्ष 26 अप्रैल को सम्पूर्ण विश्व में बौद्धिक सम्पदा दिवस मनाने के पीछे की मंशा इसे संरक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान करने की है। हालांकि , भारत ने नवाचार और सृजनात्मकता के क्षेत्र में महान उपलब्धि अर्जित की है, लेकिन उसे आगे बढाने के लिए अभी उसे बहुत कुछ करना है। इसके लिए, घरेलू आईपी फाइलिंग के साथ ही स्वीकृम पेटेंटों के व्यावसायीकरण को भी बढाया जाना आवश्यक है।

आईपी क्षेत्र में भारत के बढते रूतबे से भारत की आईपी व्यवस्था को अन्तर्राष्ट्रीय आईपी प्रणाली से बेहतर तरीके से जुडने में भी मदद मिलेगी, जिसमें इसका डब्ल्यूआईपीओ इंटरनेट समझौतों में पहुँच का मार्ग भी प्रशस्त होगा और अन्तर्राष्ट्रीय पेटेंट कार्यालयों के साथ पेटेंट जॉच में तेजी लाने के लिए समझौते करने हेतु उपाय भी किए जाएंगे। यह भी उल्लेखनीय है कि भारत ने सूचकांक के कुछ नए संकेतकों में काफी अच्छा काम किया है, जिसमें आईपी परिसम्पत्तियों के सृजन हेतु कर प्रोत्साहनों तथा लघु व्यावसायियों के लिए लक्षित आईपी प्रोत्साहन शामिल है। लघु व्यावसायियों के लिए लक्षित प्रोत्साहनों में पेटेंट फाइलिंग की त्वरित समीक्षा, फाइलिंग शुल्क में कमी तथा तकनीकी सहायता शामिल है।

यहॉ यह उल्लेख करना भी जरूरी है कि किसी देश की बौद्धिक सम्पदा अधिकार नीति, उसकी बौद्धिक सम्पदा के संरक्षण और उसके विकास की रूपरेखा तैयार करने में सहायक होती है। इस नीति से स्वास्थ्य की देखभाल, खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण को भी मदद मिलती है। इसके तहत प्रत्येक व्यक्ति अपने नाम और पहचान से उत्पाद बेचने में सक्षम होता है। लेकिन हमें आईपीआर नीति के बौद्धिक सम्पदा अधिकारों के आर्थिक–सामाजिक और सांस्कृतिक लाभों के बारे में समाज के हर वर्ग को जागरूक बनाना होगा। चौथी औद्योगिक क्रान्ति से प्रतिस्पर्द्धा करने के लिए भी भारत को आईपीआर के क्षेत्र में प्राप्त इस उपलब्धि को न केवल बनाए रखना होगा, बल्कि उसमें नित सुधार भी करते जाना होगा। यह आज की ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के लिए भी जरूरी है।

भारत की मेक इन इण्डिया, स्टार्टअप्स, स्किल इण्डिया, डिजिटल इण्डिया, स्मार्टसिटी परियोजना जैसे फ्लैगशिप कार्यक्रमों से नवाचार के क्षेत्रा में नई–नई उपलब्धियों के सामने आने की पूरी सम्भावना है, जिसके परिणामस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय बौद्धिक सम्पदा (IP) सूचकांक में भारत की स्थिति में और तेजी से सुधार होने की पूरी सम्भावना है। इस प्रकार जैसे–जैसे अर्थव्यवस्था का विकास होता है व्यापार, वाणिज्य तथा कारोबारी में उछाल आता है, तो उसी के नए आविष्कार भी सामने आते हैं। इसलिए भारत जैसी किसी भी बडी अर्थव्यवस्था को अलग–अलग क्षेत्राों में आगे बढने के लिए प्रोत्साहन देने हेतु न केवल आईपीआर सिस्टम का मौजूद रहना जरूरी है, बल्कि उसकी प्रवर्तन मशीनरी का चुस्त–दुरूस्त रहना भी जरूरी है।

खुश रहने का राज

(एक शिक्षाप्रद कहानी)

– पूजा वर्मा
राजभाषा अधिकारी

एक समय की बात है, किसी गाँव में एक महान ऋषि रहते थेद्य लोग उनके पास अपनी कठिनाईयां लेकर आते थे और ऋषि उनका मार्गदर्शन करते थे। एक दिन एक व्यक्ति, ऋषि के पास आया और ऋषि से एक प्रश्न पूछाद्य उसने ऋषि से पूछा कि "गुरुदेव मैं यह जानना चाहता हुईं कि हमेशा खुश रहने का राज क्या है ऋषि ने उससे कहा कि तुम मेरे साथ जंगल में चलो, मैं तुम्हे खुश रहने का राज बताता हूं।

ऐसा कहकर ऋषि और वह व्यक्ति जंगल की तरफ चलने लगेद्य रास्ते में ऋषि ने एक बड़ा सा पत्थर उठाया और उस व्यक्ति को कह दिया कि इसे पकड़ो और चलोद्य उस व्यक्ति ने पत्थर को उठाया और वह ऋषि के साथ साथ जंगल की तरफ चलने लगा।

'कुछ समय बाद उस व्यक्ति के हाथ में दर्द होने लगा लेकिन वह चुप रहा और चलता रहाद्य लेकिन जब चलते हुए बहुत समय बीत गया और उस व्यक्ति से दर्द सहा नहीं गया तो उसने ऋषि से कहा कि उसे दर्द हो रहा हैद्य तो ऋषि ने कहा कि इस पत्थर को नीचे रख दोद्य पत्थर को नीचे रखने पर उस व्यक्ति को बड़ी राहत महसूस हुयी।'
तभी ऋषि ने कहा दृ "यही है खुश रहने का राज व्यक्ति ने कहा दृ गुरुवर मैं समझा नहीं।

'तो ऋषि ने कहा' – जिस तरह इस पत्थर को एक मिनट तक हाथ में रखने पर थोडा सा दर्द होता है और अगर इसे एक घंटे तक हाथ में रखें तो थोडा ज्यादा दर्द होता है और अगर इसे और ज्यादा समय तक उठाये रखेंगे तो दर्द बढ़ता जायेगा उसी तरह दुखों के बोझ को जितने ज्यादा समय तक उठाये रखेंगे उतने ही ज्यादा हम दुःखी और निराश रहेंगे।

यह हम पर निर्भर करता है कि हम दुखों के बोझ को एक मिनट तक उठाये रखते है या उसे जिंदगी भर अगर तुम खुश रहना चाहते हो तो दुःख रुपी पत्थर को जल्दी से जल्दी नीचे रखना सीख लो और हो सके तो उसे उठाओ ही नहीं।

غزل

'ग़ज़ल'

तेरे चेहरे पे क्या था नजारे लगे,
यों चमकते हुए हजारों सितारे लगे।

तेरी जुल्फों की क्या, खूब है ये अदा,
कदम जब रखे मेघ कारे लगे....
...चमकते...

तेरा नूर-ए-नज़र करूं कैसे बयां,
ग़र उठाए पलक तो सरारे लगे....
चमकते...

नक़ाब चेहरे पर तुमने जो डाला यदा,
धड़कने को दिल तब हमारे लगे.....
...चमकते...

भीगी जुल्फों को तूने जो झटका दिया,
चाँदनी रात में जैसे उठते फुहारे लगे....
...चमकते...

तेजवीर सिंह 'तेज'

कविता, गीत, गज़ल व नाट्यलेखन। रंगकर्मी और नाट्य-निर्देशक, कई पत्र-पत्रिकाओं में लेखन, आकाशवाणी से चर्चाएं प्रकाशित अखिल भारतीय स्तर पर नाटकों के लिए पुरस्कृत। वर्तमान में अनुवाद व राजभाषा सेवा से जुड़े है।

غزل
'ग़ज़ल'

तेजवीर सिंह 'तेज'

सुरमई शाम का मंजर, सुहाना लगे,
मैं दो पल चुरा लूँ, गर बुरा ना लगे।
तुमसे प्यारा नहीं मुझे कोई जीस्त में,
मुझे नज़र में छुपा लो, गर बुरा ना लगे।।

है जलवा तेरा सारी कायनात में,
साथ मुझको भी ले लो, गर बुरा ना लगे।।
तुमको पाने की चाहत मचलने लगी,
मुझे दिल में बसा लो, गर बुरा ना लगे।

तेरी जुल्फों से खेलूँ, बस तमन्ना मेरी,
अपने पहलू में छुपा लो, गर बुरा ना लगे।।

दिनेश कनोजे
चार्जहैंड, तिरोड़ी खान

'देहाती' उपनाम से विख्यात श्रेष्ठ मंचीय कवि।
अनेकों राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित।
कई पुस्तके प्रकाशित एवं टी.वी. चैनलों पर कार्यक्रम प्रसारित।

सूरज स्वयं ही उदित नहीं होता।
अनंत अपेक्षाएं आमंत्रण देती है,
प्रकृति का प्रथम आचमन प्रकाश से हो।

चांद भी यु ही नहीं भटकता रात भर।
वो जागती आखों का सपना और
बैचेन दिलों का अपना
बन कर चलता रहता है।

हवा को क्या पड़ी है लहर-लहर लहराने को
वो मंद-मंद मुस्काती पड़ी रहती मांद में,
किंतु सांसों में फंसी जिंदगी की फांस को
सुलझाने उलझ जाती है, झंझावातों से।

फिर हम क्यों है अनमने से?
आंखो में आशा, जुबां पर जज्बात और
कदमों में इरादो का अस्त्र उठाएं तैयार है,
हर स्थिति का सामना करने।

हमारे साथ है वा सूरज, वो चांद, यह धरती और अंबर।
तो उठो और उल्हासित मन से आवाज दो।
जीत जायेंगे हम हर जंग, सारे भारतीय हैं संग-संग।।

इस विशाल प्रदेश के हर भाग मे शिक्षित अशिक्षित ,नागरिक और ग्रामीण सभी हिन्दी को समझते है – राहुल सांक्रत्यायन

जिंदगी का सफर

इम्मानूएल दीप
उकवा खान

गज़ल व हिंदी कविता लेखन, हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में कविताएं प्रकाशित। मिलनसार व्यक्तित्व के धनी। वर्तमान में मॉयल लिमिटेड की सेवा में।

सफर होता है आसान,
पास जब कम हो सामान।
साथ रखना, प्यार ईमान,
दिल में न रखना अभिमान।

झूठ, फरेब, ईर्ष्या, जलन से,
इंसानियत होती है बदनाम।
हिंसा करने वाले का देखिए,
कब, क्या होता है अंजाम।

बुरा करे सो, बुरा ही फंसे,
भलाई करने का रख ध्यान।
आनेवाला इक दिन जायेगा
यही जीवन का सच्चा ज्ञान।

सारे ग्रंथों का सार समझ लो,
प्रेम हर समस्या का निदान।
हर रिश्तों की मर्यादा रखना,
तब होगा तेरा मान सम्मान।

कोई न जाने कल क्या होगा,
फिर भी मौत बांट रहा इंसान।
जमाना बदलना आसान नहीं,
स्वयं बदल, बनजा अच्छा इन्सान।

ज़मीनी होना

डॉ. जय प्रकाश

युवा कवि, अनुवाद एवं कुशल प्रशिक्षक। साहित्यिक, सामाजिक सरोकार एवं हिंदी पत्र-पत्रिकाओं लेखन व संपादन। वर्तमान में ई.एस.आई.सी. की राजभाषा सेवा में है।

बहुत मुश्किल होता है
ज़मीन से ऊपर उठना।

कई दिक्कतें होती हैं
बड़े होने के रास्ते में।

फिर भी हौसले का स्वाभिमान
ऊपर तक ले ही जाता है।

पर शीर्ष पर पहुँचकर
जब वही स्वाभिमान,
अभिमानी हो जाता है।

तो ज़मीन से दूरी बढ़ जाती है,
और फिर डर लगता है ज़मीन पर आना।
शायद...
ज़मीनी रहना ही सही था।

भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिन्दी भाषा का प्रचार है – टी माधवराव

हेमलता साखरे
मुख्यालय, मॉयल लिमिटेड

दिसंबर !
तुम्हारा स्वागत है

कब से प्रतीक्षा थी तुम्हारी।
ले जाओ अपने साथ ये साल,
इसने कर डाला है बदहाल।
हर दिन, हर पल डर-डर के जिए हैं,
कोरोना, भूकंप, हादसे, मानसिक कुंठा..
सच कहूं, मर-मर के जिए हैं।
इतिहास के पन्नों में काला अध्याय जुड़ा है
कोरोना ने हर किसी को बेबस किया है।
हमने हर घड़ी है ईश्वर को पुकारा,
और किया है इंतजार तुम्हारा।
अब आये हो तो लेकर उड़ जाओ,
सारे दर्द, सारी आहें, अनिश्चितता के साए।
दे जाओ हमें एक सुकून भरी जनवरी,
नया साल दे सबको, एक जिंदगी हरी भरी।

(साभार)

राजा और ज्योतिषी

श्रीमती लक्ष्मी चौबे
मुख्यालय, नागपुर

एक राजा था, उसके दरबार में एक ज्योतिषि रहता था। राजा ज्योतिषि की ही सारी बाते मानता था। ऐसा योग करो वैसा करों बस ज्योतिषि के इसारों पर चलता था। राज्य की सारी प्रजा ज्योतिषि के कारण परेशान रहती थी। ज्योतिषि ने अपने जाल में राजा को फसाया था। एक दिन राजा और ज्योतिषि घुमने के लिए निकले, सामने से एक किसान आ रहा था, वह खेत जा रहा था। ज्योतिषि ने किसान को रोका और कहने लगा आप कहा जा रहे हो। किसान ने कहा मै खेत जा रहा हूँ। तो ज्योतिषि ने कहा अभी मत जाओ अभी मूर्हूत (ठीक समय) नही है । अभी जाना उचित नही होगा तो किसन ने कहा मै 40 साल से खेती कर रहा हूँ । उसी से मेरा परिवार चलता है, हम सब पलते है। वही मेरा कर्म है, मैं वहां अवश्य जाऊगा। तो ज्योतिषि ने कहा आप अपना हाथ दिखाए, तो किसान ने कहा मै किसी को हाथ नही दिखाता। ये हाथों के बलबुते पर ही परिवार चलता है। तो भी ज्योतिषि मनमानी करने लगा कहने लगा किसान से तुम मुझे अपना हाथ दिखाओं मुझे हाथों की लकीरें (रेखाएं) देखना है, तो किसान ने दोनो हाथ उलटा पलटाकर दिखाए। ज्योतिषि ने कहा हाथ ऐसे नही दिखाते। हाथ सिधे करके दिखाओ तो किसान ने उत्तर दिया, मैं किसी के सामने हाथ नही फैलाता, तो फिर राजा सोचने लगा कि एक किसान जब कहता है, कि मै किसी के सामने हाथ नही फैलाता मैं किसी के इसारों पर नही चलता, तो मै एक राजा होने के बावजूद भी ज्योतिषि के इसारो पर अब तक चल रहा हूँ। राजा की बुद्वि खुल गई ।

रामचरित मानस हिन्दी साहित्य का कोहनूर है – यशोदानंदन अखौरी

शिक्षा में सोशल मीडिया

गितु पटले,
तिरोडी खान

यह स्मार्ट फोन और माइक्रो ब्लागिंग का युग है। हमें जो कुछ भी जानना है वह बस एक क्लिक दूर है। सोशल मिडिया आज सभी आयु समूह द्वारा सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला उपकरण है। लेकिन युवाओं और छात्रो के बीच अधिक लोकप्रिय है।

इसे ध्यान में रखते हुए शोधकर्ताओं को लगता है कि सोशल मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।इसका उपयोग कई छात्रो तक पहुचने के लिए किया जा सकता है और यह अत्यधिक प्रभावी भी हो सकता है।बडी संख्या में एक अकादमिक विचारक है जो महसूस करते है कि सोशल मीडिया छात्रो के लिए बिगडता एजेंट है लेकिन अगर इसे समझदारी से इस्तेमाल किया जाए तो यह अत्यधिक प्रभावी हो सकता है।

शिक्षा में सोशल मीडिया का महत्व

आज फेसबुक, टविटर , लिंक्डइन आदी जैसे प्लेटफार्म सबसे अधिक व्यापक रूप से शिक्षकों, प्रोफेसरों और छात्रो द्वारा उपयोग किया जाता है। और वे उनके बीच काफी लोकप्रिय हो गए है। एक छात्र के लिए सोशल मीडिया बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योकि यह उनके लिए जानकारी को एक्सेस करना और साझा करना, उत्तर प्राप्त करना और शिक्षकों के साथ जुडना आसान बनाता है।

1. लाईव लेक्चर्स– इन दिनों कई प्रोफेसर अपने लेक्चर के लिए स्फाइप, टविटर और अन्य जगहो पर लाईव विडियो चैट कर रहे है इसे छात्रो के साथ साथ शिक्षक भी अपने घरो मे बैठकर सीखते और साझा करते है।

2. आसान काम– कई शिक्षको को लगता है कि सोशल मीडिया का उपयोग उनके और छात्रो दोनो के लिए काम को आसान बनाता है यह शिक्षक कों अपने स्वंय कि संभावनाओ कौशल और ज्ञान का विस्तार अन्वेषण करने में भी मदद करता है।

3. टीचिंग ब्लॉग और राईट अप– छात्र शिक्षको प्रोफेसरो और विचारको द्वारा ब्लाग लेख और राईटअप पडकर अपने ज्ञान को बडा सकते है। इस तरह से अच्छी सामग्री व्यापक दर्शकों तक पहुच सकती है।

निष्कर्ष – इस बात से इन्कार नही किया जा सकता कि अगर बुद्विमानी से इस्तेमाल सोशल मीडिया शिक्षा को बेहतर बना सकता है और स्मार्ट छात्रो का निर्माण कर सकते है।

क़ौमी एकता सप्ताह

(प्रथम पुरस्कृत कविता)

प्रफुल अवथे
क्लर्क कम टाइपिस्ट

भाषायी सद्भभावना दिवस शांति हो,
सद्भभावना हो भाईचारा हो
हे प्रभु मेरे वतन में यह दुबारा हो।

दवेष के दलदल से बाहर कर हमे भगवान
हर कलह की कालिमा निर्मल हो, सबके मन

फिर धरा पर वो सुधामय प्रेमधरा हो
हे प्रभु मेरे वतन में यह दुबारा हो।

दूध की नदियां भले ही न बहें फिर से
स्वर्ण महलों में भले हम ना रहे फिर से
पर कोई भूखा न हो,
हे प्रभु मेरे वतन में यह दुबारा हो।

बुद्धि दे इतनी असत्य दृ सत्य जान जाएँ हम
और बल इतना की शोषित हो न पाएँ हम
प्राण से बढ़कर हमे कर्तव्य प्यारा हो
हे प्रभु मेरे वतन में यह दुबारा हो।

हिना खान
तिरोडी खान

साथ देने में बेखाफ किया है। पडोसियों पर विश्वास,
पाकिस्तान चीन से, और भारत अमेरिका से,
दोनो देष है तलवार खरीदने में मषगुल,
पर गऐ इस बात को है, बेरहमी से भूल,

कि आज तकनीक कमिक विकास से,
बेरोक–टोक हो रहा मानव मूल्यों का लाभ,
और लगता अग्रसर इस ओर है।
भू अस्तत्व का विनाष पर कहते है।

बढती संसाधन से जीवन असान हो रहा है,
वैज्ञानिको का संजीदा शोध, पर्यावरणविदो के आकाष तले
आज दुनिया के सामने विकराल परिस्थिति खडी है
आकडों कि मानें तो, हमारे पास महज एक दषक है,
इस सृष्टि के विनाश को रोकने में

मॉयलः
प्रशिक्षण एवं भविष्य के सुनहरे अवसर

मोहिनी सोनेश्वर
तिरोडी खान

मॉयल वर्तमान में भारत का प्रतिष्ठित सरकारी उपक्रम हैं जिसमें प्रशिक्षण प्राप्त कर भविष्य बनाना कई युवाओं का स्वप्न है। और वास्तव में मॉयल हम प्रशिक्षुओ को वर्तमान कार्य परिस्थितीयॉ उपलब्ध कराकर हमें भावी भविष्य हेतु तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

मॉयल (***Moil***) अपने प्रशिक्षु, चाहे वह ऑफिस में कार्यरत हो या खान में, सम्बधित विभाग की कार्यशैली व व्यवस्थित कार्यो से वह अवगत कराकर कठिन परिश्रम करना भी पूर्णतः सीखा देता है।

विधार्थी जीवन में हम कार्य और समय में सम्बन्ध का सूत्र पडते है। परन्तु प्रशिक्षण काल मे हमें कार्य और कार्य के समय पर पूरा होने के बीच का सम्बन्ध भी सीखाया जाता है जो हमें हमारे भविष्य परिस्थितीयो के लिए एक मजबूत आधार प्रदान है। इसे प्रशिक्षण काल में हम पदस्थ कर्मचारीयो और अधिकारीयो के कार्यशैली को जानकर अपनी कार्यशैली के दोशो को दूर करने का प्रयास इसे बेहतर बना पाते है।

मॉयल लिमिटेड में प्रशिक्षण उपरान्त हम विभिन्न सरकारी व निजी संस्थाओं में कार्य कर अपने सीखे हुए ज्ञान का बेहतर इस्तेमाल कर सकते है एवं सम्बन्धी कार्यक्षेत्र के बारे में जानकारी लेकर स्वंय भी अपना नीजी व्यवसाय प्रारंभ कर सकते है। मॉयल द्वारा प्रदाय प्रशिक्षण कार्यक्रम सराहनीय है। एवं हम सभी प्रशिक्षु मॉयल प्रशिक्षण कार्यक्रम का हिस्सा बनकर अपने भविष्य को उज्जवल बनाकर श्रेष्ठ भारत निर्माण में अपना अद्वितीय योगदान दे सकते है।

राजभाषा कार्यान्वयन के वार्षिक कार्यक्रम की

मद संख्या-11 : कार्यालयी वेबसाइट

डॉ. जय प्रकाश, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर

समाज में मानव–श्रम के कई स्थानापन्न पैदा हो गये हैं। समाज के विकास के चरणों में, यांत्रिक सुविधाएं फिर रासायनिक अन्वेषणों के बाद, आज वेब–आधारित साइबर सुविधाओं से कार्यशैली पूर्णतः आधुनिक हो गयी है। किसी व्यवस्था के लिए तकनीकी रूप से अद्यतन और सुदृढ़ होना भी आवश्यक होता है इसलिए प्रशासन को इसकी आवश्यकता सबसे पहले पड़ती है। अतएव प्रशासनिक कामकाज में नवीनतम प्रौद्योगिकी का पदार्पण होने पर उसे नियमसम्मत बनाना भी ज़रूरी होता है। राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से प्रतिवर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम की मद संख्या–11 जो कि कार्यालय की वेबसाइट के संबंध में निर्देशित करता है, को भी जानना आवश्यक है। राजभाषा कार्यान्वयन के वार्षिक कार्यक्रम की मद संख्या–11 : वेबसाइट द्विभाषी हो के अनुसार कोई कार्यालय फिर चाहे वह राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी 'क' या 'ख' अथवा 'ग' क्षेत्र में स्थित हो, उसे अपनी वेबसाइट द्विभाषी रूप में प्रदर्शित करनी होगी।

हिंदी के प्रयोग के लिए वार्षिक कार्यक्रम Annual Programme for use of Hindi				
क्र.सं. S.NO.	कार्य विवरण DETAILS OF WORK	'क' क्षेत्र 'A' REGION	'ख' क्षेत्र 'B' REGION	'ग' क्षेत्र 'C' REGION
11	वेबसाइट द्विभाषी हो WEBSITE BILINGUAL	100% द्विभाषी / BILINGUAL	100% द्विभाषी / BILINGUAL	100% द्विभाषी / BILINGUAL

(स्रोत : भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर जारी वर्ष 2020–21 का वार्षिक कार्यक्रम)

इस संबंध में राजभाषा विभाग के दिनाँक 01 अगस्त, 2017 के कार्यालय ज्ञापन संख्या : 20012/10/2017–रा.भा.(नीति) में स्पष्ट जानकारी दी गयी है कि मंत्रालयों/विभागों और उनके अधीनस्थ कार्यालयों और स्वायत्त निकायों की वेबसाइट द्विभाषी तैयार की जाए एव ं उस पर अपलोड की जाने वाली सामग्री भी द्विभाषी रूप में ही अपलोड करवायी जाए। यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि संसदीय राजभाषा समिति की 9वें खंड की संस्तुतियों पर माननीय राष्ट्रपति जी के आदेश संकल्प के रूप में दिनाँक 31.03.2017 को जारी किए गए थे। संसदीय राजभाषा समिति द्वारा की गयी संस्तुतियाँ संघ क े सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने और आम आदमी से संपर्क करने की दृष्टि से की गयी हैं तथा इन संस्तुतियों को माननीय राष्ट्रपति जी ने स्वीकार करके अनुपालन के आदेश भी दिये हैं। ऐसी दो प्रमुख संस्तुतियों का उल्लेख करना समीचीन है–

क्र. Sr.	संस्तुति Recommendation	माननीय राष्ट्रपति जी के आदेश President's Order
28	समिति का मत है कि एन.आई.सी. द्वारा वेबसाइट से संबंधित उसी सामग्री/आँकड़ों को ही वेबसाइट पर डालने के लिए स्वीकृत किया जाए, जिसे द्विभाषी रूप में उन्हें उपलब्ध कराया जाए। The Committee is of the opinion that the NIC should accept only those data/materials for developing website which is submitted to them in bilingual form.	यह संस्तुति इस संशोधन के साथ स्वीकार की जाती है कि वेबसाइट की सामग्री को द्विभाषी रूप में उपलब्ध कराने और उसे अपलोड कराने का कार्य विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों आदि के विभागाध्यक्षों/कार्यालयाध्यक्षों के निर्देशन में वेब इन्फॉर्मेशन मैनेजरों के माध्यम से सुनिश्चित किया जाए। The recommendation is accepted with modification that under the direction of Head of Office/Department, the Web Information Managers of Ministries/ Departments/Offices should ensure that the data/material made available to them for uploading should be in bilingual form.
	मंत्रालय और इसके सभी नियंत्रणाधीन कार्यालयों की वेबसाइट द्विभाषी रूप में होनी चाहिए और वेबसाइट को अद्यतन करते समय हिंदी के पृष्ठों को भी अनिवार्य रूप से अपलोड किया जाना चाहिए। The website of the Ministry and all Offices under its control should be available in bilingual form and while updating the website, pages of Hindi should also be compulsorily loaded there.	यह संस्तुति स्वीकार की जाती है। The recommendation is accepted.

[स्रोत : भारत के राजपत्र, के भाग–1, संस्करण–1 में प्रकाशित संकल्प सं. 20012/10/2017–रा.भा(नीति)]

उपर्युक्त संस्तुतियों से स्पष्ट है कि नवीनतम प्रौद्योगिकियों को उपयोग करते समय भी राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन का सम्यक् अनुपालन किया जाना अनिवार्य है। संस्तुतियां पर माननीय राष्ट्रपति जी का आदेश वेबसाइट के मामलों को गंभीरतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए आइये समझते हैं कि किस प्रकार से कोई वेबसाइट आपके कार्यालय को एक तत्पर, सर्वसुलभ और सुविधाजनक कार्यालय में रूपांतरित कर देती है।

- (2) कार्यालय की वेबसाइट होने के लाभ :
- कार्यालय की वैश्विक पहुँच में विस्तार।
- कार्यावधि के बाद भी सेवाओं की उपलब्धता।
- व्यावसायिक विकास एवं लोगों से अधिक जुड़ाव।
- आपके उत्पादों/सेवाओं का बेहतर प्रदर्शन व सूचना उपलब्धता।
- बहुभाषिक होने से प्रयोक्ता सुलभ।
- सेवाप्रदाता एवं उपभोक्ता के समय की बचत।
- ऑनलाइन पत्राचार, वार्तालाप एवं समाधान।
- स्टेशनरी व कागजी खपत से मुक्ति।
- विज्ञापन खर्चों में कटौती।
- सरकारी कार्यालयों में आरटीआई अधिनियम, 2005 आवेदनों की कमी।
- प्रत्यक्ष रूप से किसी बहस, टकराव या अभद्रता की शून्य संभावना।

(3) कार्यालय की वेबसाइट कैसी हो? :

- राजभाषा नियमों के पहलू के अतिरिक्त जब किसी वेबसाइट के निर्माण के लिए सामग्री चयनित की जाए तो उस कार्यालय या प्रतिष्ठान से जुड़े. सभी पक्षों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। किसी कार्यालय की कार्य–प्रकृति के आधार पर भी, विशिष्ट स्वरूप की वेबसाइट का निर्माण तय होता है। वेबसाइट का प्रबंधनकरने वाले के समक्ष सबसे बड़ी और पहली शर्त यह होती है कि किसी गतिशील तरंग की भाँति उनकी वेबसाइट भी नवीनतम और अद्यतन हो। फिर भी कुछ सामान्य तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, किसी वेबसाइट के आदर्श स्वरूप पर चर्चा करेंगे।

मुखपृष्ठ

3.1 किसी वेबसाइट का मुखपृष्ठ बहुत महत्वप ूर्ण होता है। यह कार्यालय के नाम पट्ट या व्यवसाय के बैनर/शीर्षक की तरह ही काम करता है। मुखपृष्ठ को सर्वाधिक सूचनापूर्ण और समस्त लिंक को दर्शाने वाला होना चाहिए। इसमें कार्यालय की संक्षिप्त जानकारी, संपर्क के लिए डाक–पता, फोन, टोल–फ्री नंबर, ई–मेल इत्यादि का जिक्र होना चाहिए।

अद्यतन सूचनाएं और कार्यक्रमों को भी दर्शाया जाना चाहिए। मुखपृष्ठ सजीला और आकर्षक बनाना चाहिए।

द्वितीय वेब–पृष्ठ/Secondary Web

3.2 द्वितीय वेब–पृष्ठ दूसरे स्तर के पृष्ठ होते हैं जो मुखपृष्ठ पर दी गयी लिंक से जुड़े होते हैं। द्वितीय स्तर के इन पृष्ठों से कार्यालय/प्रतिष्ठान की विस्तृत जानकारी दी जाती है। इन द्वितीयक पृष्ठों के माध्यम से कार्यालय का स्थापना व इतिहास, पंजीकरण–वैधता, कार्याधिकार–क्षेत्राधिकार, नियम–अधिनियम, अधिकारी–पदाधिकारी, वार्षिक रिपोर्ट–सांख्यिकी, विभाग–अनुभाग, ऑनलाइन सुविधाएं, डाउनलोड योग्य सामग्री इत्यादि।

तृतीय वेब–पृष्ठ/Tertiary Web-pages

3.3 तृतीय स्तर के वेब–पृष्ठ पर ऑनलाइन सेवा, शिकायत, आरटीआई आवेदन, भर्ती लिंक इत्यादि को व्यवस्थित करना चाहिए। इस प्रकार से तृतीय वेब–पृष्ठ पर उन अत्यावष्यक चीजों को रखना उचित होगा जिसकी खोज में वास्तविक लाभार्थी/प्रयोगकर्ता ढूँढ़ाई कर रहे हों। सामान्य जानकारी लेने वालों के लिए केवल मुखपृष्ठ या द्वितीय वेब–पृष्ठ ही काफी हैं। इस प्रकार कार्यालय/संगठन की आवश्यकता के अनुसार वेबसाइट को उपयोगी और प्रयोक्ता सुलभ बनाया जा सकता है।

(4) कुछ सुव्यवस्थित वेबसाइट के उदाहरण

केन्द्र सरकार की सेवाओं से जुड़ी निम्नलिखित वेबसाइट्स का प्रबंधन अनुकरणीय है द्विभाषी रूप से तैयार इन वेबसाइटों का प्रत्येक पक्ष राजभाषा कार्यान्वयन का अनुपालन करता है। इनका अवलोकन अवष्य करें–

www.upsc.gov.in
www.ssc.nic.in
www.rajbhasha.gov.in
www.hindivishwa.org
www.ignou.ac.in
www.nios.ac.in
www.esic.nic.in
www.ugc.ac.in
www.niti.gov.in
www.greentrubunal.gov.in

उपर्युक्त सूची में प्रषासनिक कार्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों, भर्ती आयोगों, विनियामक संस्थानों की वेबसाइट्स शामिल हैं। इनकी यात्रा आपके दृष्टिकोण को विस्तृत कर सकती है। अतएव यह परामर्ष है कि आप एक बार इन वेबसाइट्स का भ्रमण अवष्य करें और लाभान्वित हों।

मॉयल भारती
की यात्रा

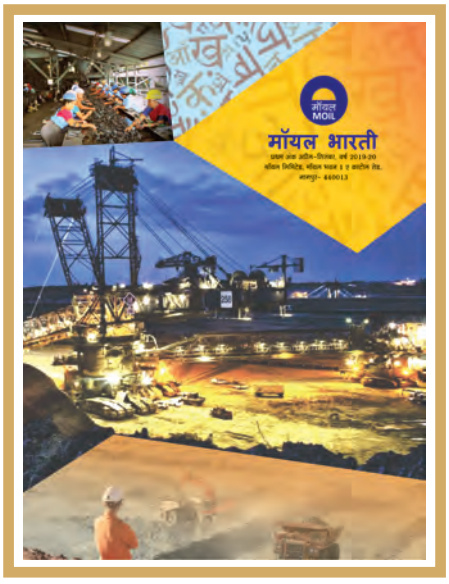

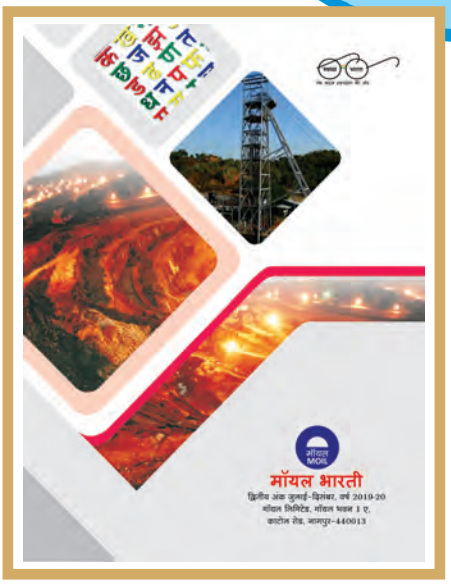

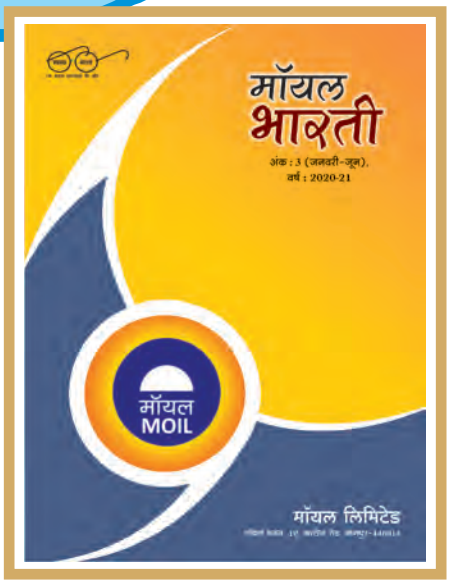

मॉयल में हिन्दी को प्रोत्साहित करती गृह पत्रिका मॉयल भारती

भरवेली (जबलपुर एक्सप्रेस)।

भारत सरकार के केन्द्रीय इस्पात मंत्रालय के 12 सरकारी उपक्रमों में से एक मिनी रत्न 'ए' शेडयूल कंपनी मॉयल लिमिटेड ऐसा उपक्रम है जो सीमित साधन एवं सुविधाओं में सभी राष्ट्रीय कार्यक्रमों का संचालन सफलतापूर्वक करते हुए अपने दायित्वों का निर्वाहन बिना किसी अवरोध के करते आ रहा है। केन्द्र सरकार की मंशा के अनुसार मॉयल लिमिटेड मात्र भाषा हिन्दी को प्रोत्साहित करने एवं कंपनी का अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिये लगातार सक्रिय है। क्योंकि हिन्दी के प्रचार प्रसार को उत्तरोत्तर बढाने के लिये यह जरूरी है कि हम हिन्दी को अपनी मूल चिन्ता प्रक्रिया का माध्यम बनाये एवं वार्तालाप, भाषा जो हमें एक दूसरे से जोड़ती है। यह देश में सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा है जो वृहद स्तर पर देश के लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। ऐसी भाषा को अधिक से अधिक लोगों की जुबान का भाग बनाना सभी का कर्तव्य है। इन्हीं सब बातों को ध्यान मे रखते हुए मॉयल पहले संकल्प के नाम से गृह पत्रिका प्रकाशित करती थी। जिसमें और अधिक सुधार करते हुए एक कदम आगे जाकर कंपनी ने ''मॉयल भारती'' नामक एक गृह पत्रिका प्रारंभ की है जो पूरी तरह से हिन्दी में है। इसके संपादक मंडल में मुकुन्द पी. चैधरी अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, श्रीमती उषा सिह निदेशक मानव संसाधन, डी.व्ही. राजू कार्यपालक निदेशक कार्मिक, त्रिलोचन दास महाप्रबंधक कार्मिक,

एन.डी. पाण्डेय, कंपनी सचिव, पूजा वर्मा राजभाषा अधिकारी, अनिल गरडे सहायक अनुवादक है। पत्रिका के संबंध में अध्यक्ष सह प्रबंधक निदेशक चैधरी का कहना है कि मॉयल राजभाषा हिन्दी को गति प्रदान करने के साथ कार्मिकों में भाषा की समझ और रचनात्मकता को भी विकसित करता है। मेरा विश्वास है कि मॉयल अपने प्रयासों से निश्चित ही राजभाषा के क्षेत्र में प्रथम स्थान प्राप्त करेगा। हिन्दी के प्रति कर्मचारी, कामगार की लगन, प्रतिभा हमें इसकी भरोसा दिलाती है। अगर हम हिन्दी को सरल उपयोगी लोकप्रिय एवं निरंतर अपने आपको एक नये फ्लेवर में गढ़ने वाली भाषा के रूप में ढाल सके तो वह सभी सहज ही स्वीकार होगी। हम हिन्दी को अपना माध्यम बनाये और देश का गौरव बढ़ाये।

गृह पत्रिका मॉयल भारती के तीसरे अंक में अनेक महत्वपूर्ण जानकारियों का प्रकाशन करने के साथ-साथ रचनात्मक एवं सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करने वाले विभिन्न रचनाकारों की रचनाएं एवं लेखों का समावेश पत्रिका में चार चांद लगाता है। सबसे महत्वपूर्ण हिन्दी ई टूल्स का प्रयोग दैनिक प्रयोग में लाये जाने वाले शब्दकोष अंग्रेजी हिन्दी मराठी शीर्षक में जो जानकारी दी गई है वह सराहनीय है। अंग्रेजी भाषा में विदेशी भाषा की अभिव्यक्तियों का प्रयोग के अर्थ को सुंदर ढंग से पत्रिका में समझाया गया है। संपादक ने पत्रिका में विश्व कोविड-19 महामारी में मॉयल लिमिटेड द्वारा किये गये जनउपयोगी कार्यो पर विशेष प्रकाश डालते हुए बताया कि किस तरह से कंपनी ने महामारी में अपनी भूमिका का सक्रिय निर्वाहन किया। साथ ही राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन पर भी विशेष प्रकाश डाला गया जो मॉयल के तत्वाधान में मंडला में आयोजित किया गया था। उपमहाप्रबंधक एवं अभिकर्ता मध्यप्रदेश समूह-एक व्ही.आर. परिदा का कहना है कि मॉयल राजभाषा हिन्दी को हर स्तर पर अधिक से अधिक उपयोग के लिये लगातार अपना योगदान दे रही है। जिससे सरकारी कामकाज में भी सहजता आती है। उसी तरह से खान प्रबंधक उमेदसिंह भाटी का कहना है कि भारत सरकार के राजभाषा मंत्रालय के द्वारा दिये गये मार्गदर्शन में मॉयल माईनिंग क्षेत्र में हिन्दी को हर स्तर पर बढ़ावा देकर कामकाज में बोलचाल की भाषा को आसान कर रही है। पत्रिका मॉयल भारती कंपनी में मातृभाषा हिन्दी को शिखर में ले जाने मील का पत्थर साबित होगी। हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत भरवेली सहित सभी खदानों में विविध आयोजन किये गये है। हर्ष की बात यह है कि राजभाषा हिन्दी को प्रोत्साहित करने के लिये मॉयल को सम्मान भी प्राप्त हो चुका है।

मॉयल फाऊडेंशन द्वारा पोषण एवं कोरोना महामारी निवारण किट का वितरण..

जगप्रेरणा डॉटकॉम, बालाघाट।

जिला मुख्यालय से 5 किलोमीटर दूर मैंगनीज ओर इंडिया लिमिटेड बालाघाट खान प्रबंधन के द्वारा अपने सामाजिक उतरदायित्वों का निर्वाहन करते हुए सामाजिक उत्तरदायित्स सीएसआर योजना के अंतर्गत प्रबंधन द्वारा मॉयल नगरी से लगे 05 ग्राम पंचायत भरवेली, हीरापुर, आवलाझरी, तवेझरी एवं मंझारा में विभिन्न रचनात्मक व सकारात्मक कार्य करके ग्रामीण जनता को लाभ पहुंचाया जा रहा है। वहीं स्वास्थ्य सुविधा बीमारी से बचने के लिये समय समय पर आवश्यक सुविधायें उपलब्ध कराई जा रही है। इसी क्रम के अंतर्गत ग्राम पंचायत में बीपीएल गरीब परिवारों को 175 पोषण एवं कोरोना महामारी निवारण किट का वितरण किया गया।

इस कार्य में अभिकर्ता एवं संयुक्त महाप्रबंधक खान विकास रंजन परिदा, खान प्रबंध उमेदसिंह भाटी, भूगर्भ अधिकारी विनय राहंगडाले, कार्मिक विभाग के प्रमुख असिम शेख, सिविल विभाग के प्रमुख विकास मेश्राम, वित्त विभाग के प्रमुख हरीश जोशी के मार्गदर्शन में बॉयफसंस्था के एसपीओ के रवि रामटेके के नेतृत्व में पांच ग्रामों के सार्वजनिक संस्थान जैसे ग्राम पंचायत भवन व आंगनवाड़ी में सैनेटाईजर मशीन, पल्स मशीन, थर्मामीटर मशीन का वितरण किया गया। जिसमें ग्राम पंचायत भरवेली की सरपंच श्रीमती रेखा सरवारे, श्रीमती अनिता बहाने आंगनवाड़ी क्रमांक-6, श्रीमती गरिमा यशवंत गेडाम आंगनवाड़ी क्रमांक-5, श्रीमती जयश्री गेडाम आंगनवाड़ी क्रमांक-4, ग्राम भरवेली में सरपंच पवन मरकाम, विकिला डोंगरे आंगनवाड़ी क्रमांक-2 हीरापुर, ग्राम पंचायत आंवलाझरी में वर्तमान सरपंच प्रभारी संतोष लिल्हारे, महेश सूरज किरण शर्मा, शासकीय हाईस्कूल आंवलाझरी, श्रीमती रविता बोबरडे आंगनवाडी क्रमांक-2 ग्राम पंचायत टवेझरी से सरपंच कुलदीप निकोसे, अजीत कुमार श्रीवास्तव प्राथमिक शाला टवेझरी, श्रीमती गीता बागडे आंगनवाडी टवेझरी, ग्राम मंझारा से बालचंद मानेश्वर प्राथमिक शाला मंझारा, भगतसिंह मरकाम प्राथमिक शाला मंझाराटोला, श्रीमती आशा डोंगर आंगनवाड़ी क्रमांक 01, सभी पांच ग्रामों में कोरोना महामारी से बचाव हेतु मशीनों की किट कार्यालयीन उपयोग के लिये मॉयल फाऊडेंशन के द्वारा प्रदान किया गया। वहीं कोरोना काल में कुपोषण से बचाव के लिये भी फाऊडेंशन के द्वारा गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले कुपोषित बच्चे, गर्भवती माताओं को पोषक किट का वितरण किया गया। जिसमें ग्राम पंचायत भरवेली के 61 गरीब परिवार, ग्राम मंझारा के 40 गरीब परिवार को फाऊडेंशन के द्वारा के 6 किलोग्राम राशि, 100 ग्राम फल्लीदाना पपड़ी, एवं 100 मि.मी.जीवन ड्राप प्रत्येक गरीब परिवार को कुपोषण से बचाव के लिये वितरण किया गया। खान प्रबंधक श्री भाटी के अनुसार मॉयल अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को निभाते हुए गरीब परिवारों को लाभ पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान निरंतर प्रदान करते आ रहा है। यह क्रम आगे भी जारी रहेगा।

गर्व की बात

मॉयल परिवार एवं तिरोड़ी खान के लिए गर्व कि बात है कि मॉयल तिरोड़ी खान में कार्यरत माईनमेट श्री तिलकचंद बागड़े के सुपुत्र श्री प्रतिक बागड़े ने अपने पहले हि प्रयास में अखिल भारतीय NEET कि परीक्षा काफी अव्वल नंबर से उर्त्तीण की है। 13 सितंबर 2020 को आयोजित अखिल भारतीय NEET की परीक्षा में कुल 720 अंको में 528 अंक हासिल किये।

इस अव्वल अंको के कारण उन्हे दिनांक 26/11/2020 को शासकीय गॉधी मेडीकल कॉलेज भोपाल में MBBS में दाखिला मिला है।

प्रतीक बचपन से ही काफी मेघावी छात्र है जो कक्षा दसवी डी.ए.वी. मॉयल पब्लिक स्कुल, चिखला से 84 प्रतिशत के साथ व कक्षा बारहवी विठ्ठल चामट जुनियर कालेज, दिघोरी नागपुर (महा.) से 88 प्रतिशत के साथ उत्तीर्ण किया। **प्रतीक काफी अच्छा तबला वादक भी है।**

सोच
(Think)

मेघा भारतकर
तिरोडी खान

आइलैण्ड में किसी प्रसिद्व स्थान के बारे मे कहा जाता है कि ''जैसा सोचेगे, वैसा बोलेगे और करेगे''। उसी स्थान पर यह कहावत भी प्रसिद्व है,कि किसी पेड़ को सुखाना होता था, तो उसे काटते नही थें, बल्कि लोग उसके आस–पास खड़े होकर रोज–रोज पेड़ को कोसते रहतें थें। जिससे पेड़ धीरे–धीरे सुख जाता था।

इसीलियें कहतें है कि जो हम सोचते है, वह सिद्व होता है। सबसें शक्तिशाली बात यह है, कि हम अपनें चारों ओर सच्चाई, पवित्रता और स्नेह सें भरा सर्कल बनाये रखें।

आज हम सब बार–बार हाथ धो रहे है, सामाजिक दुरी बना रहे है, मास्क और सैनिटाइजर का उपयोग कर रहे है, पर क्या हम जानते है कि सैनिटाइजर और हाथ धोने के तुरन्त बाद किस – किस चीजों के सम्पर्क में आ रहे है, बीमारी के अन्य स्त्रोत भी हो सकते है। एक पॉजिटिव सोच सें स्वंय को, परिवार को और हमारे मॉयल परिवार को उर्जावान बना सकते है।

सोच सकारात्मक होने से कभी भी निराशा प्राप्त नही होती है। हमेशा एक अच्छी सोच, अच्छा संकल्प होता है। सुबह उठते से ही फोन देखनें सें पहलें, घर के दुसरें काम करने सें पहले स्वंय सें यह संकल्प करना है, कि मै स्वस्थ हुॅ, सुरक्षित हुॅ सोचना चाहियें। क्योंकि सुबह का पहला विचार हमारें पूरे दिन की दिनचर्या पर निर्भर करता है। रात का आखिरी विचार अच्छी नींद लेने के लिये जरूरी होता है।

मॉयल के विकास पर कोरोना जैसी महामारी नें समस्या उत्पन्न कर रखी है, इस विकास को आगे बढ़ाने के लियें हम सभी को ''मै स्वस्थ हुॅ, मै सुरक्षित हुॅ मेरा परिवार सुरक्षित है, मॉयल परिवार सुरक्षित है'' यह सर्कल बनायें रखें। मॉयल परिवार को स्वस्थ और सुरक्षित बनायें रखने के लिये दो मिनट स्वंय को दीजियें, इस सोच का मानसिक चित्रण कीजियें ।

''आपके अंदर बेंहद शांति या शांत मन, निस्वार्थ मन और बिना पक्षपात के किया गया प्रयास सदैव सफलता देता है।''

''रहो सुरक्षित, करो सुरक्षित।''

मेहनत वह सुनहरी चाभी है जो बंद दरवाजे भी खोल देती है।

दूसरों की सोच से अधिक कर दिखाना ही आपकी असली सफलता है।

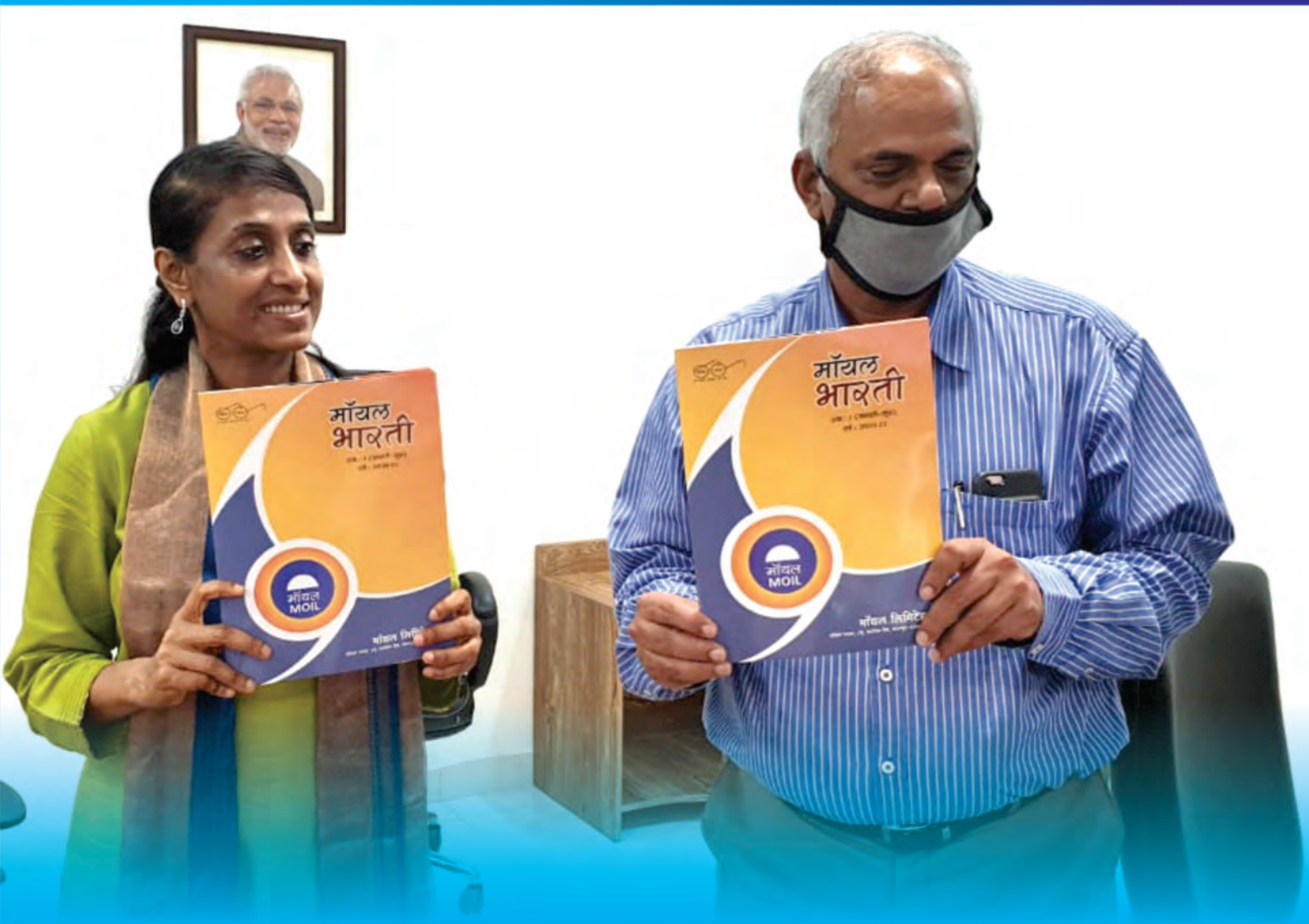

मॉयल भारती
MOIL

VIGILANCE AWARENESS WEEK 2020
MOIL LTD.
मॉयल MOIL

Help us to help you

नोवल कोरोनावायरस (COVID-19)
NOVEL CORONAVIRUS (COVID-19)

खुद रहें सुरक्षित, दूसरों को रखें सुरक्षित
Protect yourself and others

क्या करें और क्या ना करें Follow these Do's and Don'ts

क्या करें ✓ Do's ✓

बार–बार हाथ धोएं। जब आपके हाथ स्पष्ट रुप से गंदे न हों, तब भी अपने हाथों को अल्कोहल – आधारित हैंड वॉश या साबुन और पानी से साफ करें		Practice frequent hand washing. Wash hands with soap and water or use alcohol based hand rub. Wash hands even if they are visibly clean
छींकते और खांसते समय, अपना मुंह व नाक को टिशू पेपर/रुमाल से ढकें		Cover your nose and mouth with handkerchief / tissue paper while sneezing and coughing
प्रयोग के तुरंत बाद टिशू पेपर को किसी बंद डिब्बे में फेंक दें		Throw used tissue paper into closed bins immediately after use
अगर आपको बुखार, खांसी और सांस लेने में कठिनाई है तो डॉक्टर से संपर्क करें। डॉक्टर से मिलने के दौरान अपने मुंह और नाक को ढंकने के लिए मास्क/कपड़े का प्रयोग करें		See a doctor if you feel unwell (fever, breathing difficulty and cough). While visiting doctor use a mask / cloth to cover your mouth and nose
अगर आप में कोरोना वायरस के लक्षण हैं, तो कृपया राज्य हेल्पलाईन नंबर या स्वास्थ्य मंत्रालय की 24X7 हेल्पलाईन नंबर 011-23978046 पर कॉल करें		If you have these signs/symptoms please call State helpline number or Ministry of Health & Family Welfare's 24X7 helpline at 011-23978046
भीड़–भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें		Avoid participating in large gatherings

क्या न करें ✗ Don'ts ✗

यदि आपको खांसी और बुखार का अनुभव हो रहा हो, तो किसी के साथ संपर्क में ना आयें		Have a close contact with anyone, if you're experiencing cough and fever
अपनी आंख, नाक या मुंह को ना छूयें		Touch your eyes, nose and mouth
सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें		Spit in public

हम सब साथ मिलकर कोरोनावायरस से लड़ सकते हैं
Together we can fight Coronavirus